ज्ञानामृत

नवम्बर, 1988
वर्ष 24 ❋ अंक 5
मूल्य 1.75

भिन्न-भिन्न वर्गों का सहयोग

प्रसिद्ध धार्मिक नेताओं का सम्मेलन

व्यापारिक, उद्योग तथा आध्यात्मिक नेताओं का सम्मेलन

राजनीतिक नेताओं का सहयोग : ब्रह्माकुमारी बहिनें श्री बी० डी० जत्ती, पूर्व उपराष्ट्रपति से 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम पर वार्तालाप करते हुए।

अमृत-सूची

१. ५० देशों में चलाया जा रहा एक अभियान १
२. सन्देश ८
३. सहयोग की अनुपस्थिति संघर्ष को जन्म देती है १०
४. विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक १३
५. सुखमय संसार के निर्माण के लिये लक्ष्य चित्र गुणात्मक चिन्तन, सहयोग की भावना तथा रचनात्मक प्रवृत्ति का महत्व १६
६. डाक्टर अथवा चिकित्सक संसार को बेहतर बनाने लिये क्या सहयोग दे सकते हैं १९
७. धार्मिक या आध्यात्मिक नेता विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं? २१
८. महिलाएं संसार को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकती हैं? २३
९. शिक्षाविद् संसार को बेहतर बनाने के लिये क्या सहयोग दे सकते हैं? २४
१०. संसार को सुखमय तथा बेहतर बनाने के लिये जन-प्रसार के साधन क्या सहयोग दे सकते हैं? २५
११. दुनिया को बेहतर बनाने के लिये प्रशासक अथवा प्रबन्धक वर्ग का सहयोग २६
१२. राजनीतिज्ञ विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं? २७
१३. वैज्ञानिक और प्रौयोगिकविद् विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं २८
१४. "व्याधि" – वरदान या विश्व २९
१५. दिवाली मनाने से पहले ३२

• शेष वर्गों की सेवा का समाचार अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा

बम्बई में लॉरसन एन्ड टर्बो में तकनीकज्ञों के लिये कार्यक्रम।

देहली विश्वविद्यालय रोटरी क्लब में सामाजिक सेवा सस्थाओ के लिये कार्यक्रम

फिल्म अभिनेताओं का सहयोग

प्रसिद्ध अभिनेता धर्मेन्द्र जी

विकलांगों की सेवा

भिन्न-भिन्न वर्गों का सहयोग

Regd No. 10563/65-D, (E)—70

मैसोर में वैज्ञानिक तथा इन्जिनीयर सम्मेलन

मोदीनगर में महिला सम्मेलन

भुवनेश्वर में प्रशासक सम्मेलन

कवि और लेखकों का सहयोग (हाथरस में)

बम्बई में 'सफलता के लिए उपाय' विषय पर सम्मेलन

५० देशों में चलाया जा रहा एक अभियान

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' एक नवीन सामाजिक-आध्यात्मिक अभियान का मुख्य शीर्षक है जिसके अर्न्तगत हर महाद्वीप में विभिन्न प्रकार के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य मनुष्य में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के महत्त्व को समझने, मनुष्यों के परस्पर सम्बन्धों को सुधारने, बेहतर संसार की रूप-रेखा क्या होगी – उसकी संकल्पना करने, और स्वयं-परिवर्तन की कार्य-योजना को क्रियान्वित रूप देकर विश्व परिवर्तन करने में सहयोगी बनने के लिये जागृति लाना है।

सभी मनुष्य, चाहे वे किसी भी व्यवसाय या आयु के हों, तथा सभी संस्थाऐं चाहे उनका कार्यक्षेत्र कोई भी हो, एक बेहतर संसार एवं आने वाले बेहतर कल की इच्छा रखते हैं। परन्तु अधिकांश लोगों को यह बात अच्छी प्रकार स्पष्ट नहीं है कि सुखमय संसार कैसा होगा। और न ही उन्हें यह बात स्पष्ट है कि व्यक्ति या संस्थाऐं ऐसे संसार की रचना में अपना क्या सहयोग दे सकते हैं। अन्य बहुत-से लोगों को तो संसार की वर्तमान परिस्थितियों से जैसे कि कोई वास्ता ही नहीं है, मानो कि इन परिस्थितियों का उन पर कोई प्रभाव पड़ेगा ही नहीं या उनकी ऐसी धारणा है कि क्यों कि वे संसार की वर्तमान परिस्थितियों को बदलने में, व्यक्तिगत रूप से कोई विशेष कार्य नहीं कर सकते, इसलिये वे समझते हैं कि इस दिशा में कुछ भी करने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। वे यह नहीं महसूस करते कि अगर वे स्वयं में परिवर्तन लाएंगे, तो विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाएगी। फिर भी कुछ अन्य मनुष्य वर्तमान विश्व की समस्याओं की चर्चा में काफी समय व शक्ति खर्च करते हैं। परन्तु वे किसी भी समाधान तक पहुँचते हुए मालूम नहीं होते। वरन् इस प्रक्रिया में वे कुछ निराश-से हो जाते हैं। इस प्रकार एक सुखमय संसार की सार्वजनिक इच्छा अधूरी ही रह जाती है। फिर भी सभी मनुष्यों की यह हार्दिक अभिलाषा है कि एक सुखमय संसार हो और वे यह आशा भी रखते हैं कि ऐसा संसार स्थापित किया जा सकता है।

सकारात्मक प्रयास की आवश्यकता

हम में से अधिकांश लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी आज की मुख्य समस्याऐं कुछ इस प्रकार हैं – (१)बढ़ती हुई शस्त्रों की होड़, (२)बेरोजगारी, आतंकित करने वाली गरीबी एवं आर्थिक

आइये हाथ से हाथ मिलाएं!

अन्याय, (३) मनुष्यों की जनसंख्या बढ़ने की दर में तीव्र वृद्धि, (४)पूरे विश्व में व्याप्त तनाव, (५)अपराध व हिंसा की घटनाओं में वृद्धि, (६) धन व साधनों का दुरूपयोग एवं भ्रष्टाचार, (७) शारीरिक एवं मानसिक रोग, (८) नशीले पदार्थों की आदत, (९) धर्मान्धता, अन्धा-नुयायिता एवं विभिन्न धार्मिक संप्रदायों में असहिष्णुता, (१०) भेद-भाव, उजड़ते घर एवं पारिवारिक फूट, (११) मानव अधिकारों का खण्डन, (१२)स्त्री जाति के प्रति गलत भावनाऐं, निरक्षरता, अज्ञानता तथा अन्ध विश्वास, (१३) पक्षपात आदि-आदि।

हम सब पहले से ही समाज में व्याप्त इन समस्याओं व इनकी शाखाओं-उप-शाखाओं से परिचित हैं। इसलिये, शायद हमें अपने मन को इन समस्याओं में और अधिक उलझाये रखने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें सुखमय संसार के श्रेष्ठ लक्ष्य के लिये एक सकारात्मक एवं श्रेष्ठ दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। यह विधि हमें एक सुखद अनुभव तो प्रदान करेगी ही, बल्कि अपरोक्ष रूप में हमें समस्याओ के समाधान की ओर भी ले जायेगी।

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार नामक यह अभियान हमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उच्च प्रयास के लिये प्रेरित करता है। यह हमें बताता है कि हम पहले समस्याओं को कुछ क्षणों के लिये एक ओर रख दें और अपने मस्तिष्क में एक स्पष्ट संकल्पना करें कि सुखमय संसार या बेहतर संसार का अर्थ क्या है और ऐसे बेहतर संसार के श्रेष्ठ लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, अर्थात् इस लक्ष्य को पाने के लिये हमारी कार्य-योजना क्या होनी चाहिये। इस सकारात्मक दृष्टि- कोण का उद्देश्य, समस्याओं की उपेक्षा करना नहीं है वरन् अपनी संकल्पना को उनसे पार ले जाना है। यह प्रयास एक अधिक आशा- जनक संकल्पना को जन्म देगा क्यों कि यह किसी समस्या के नकारात्मक विचारों से प्रभावित नहीं होगा।

सुखमय संसार का अर्थ क्या है ?

अब यदि हम विभिन्न व्यवसाय व स्तर वाले मनुष्यों के विचारों को इस विषय को लेकर सर्वेक्षण कराते हैं तो हम पायेंगे कि उनके विचार काफी हद तक निम्नलिखित बिन्दुओं के इर्द-गिर्द घूमते हुए अर्थात् इनसे मिलते हुए होंगे । उनके विचारों में बेहतर संसार वह होगा जिसमें:—

(१) प्रेम, शान्ति, अहिंसा व सद्‌भावना हो ।

(२) निष्कपटता, ईमानदारी, एकता, सम्मान व अवसर मिलने की समानता हो ।

(३) वातावरण शुद्ध हो व प्रकृति सन्तुलित हो ।

(४) मनुष्य खुशदिल, मित्र भाव वाले व सहयोगी हों और स्वस्थ, सम्पन्न तथा प्रसन्नचित्त हों । वे स्वयं भी शान्ति पूर्वक रहते हों व दूसरों के जीवन को भी शान्तिपूर्ण और जीने योग्य बनाते हों ।

(५) नारी का समाज में प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान हो ।

(६) परस्पर टकराव न हों और सभी में स्नेह के भाव से दूसरों को देने की उमंग हो ।

(७) मनुष्य शुद्ध मन्सा वाले एवं गुणवान हों तथा नकारात्मक विचारों से मुक्त हों ।

(८) जनसंख्या कम हो व जन्म व मृत्यु की दर भी कम हो ।

(९) मनुष्य सात्विक भोजन ग्रहण करते हों और उनकी चलन व व्यवहार भी सात्विक हो ।

(१०) कला व संस्कृति परिशुद्ध हो और वे शिक्षा, विकास तथा स्वस्थ मनोरंजन के साधन हों ।

पथ में बाधाऐं

अब प्रश्न यह उठता है कि प्रेम, विश्वास, ईमानदारी, एकता से परिपूर्ण व घृणा और सन्देह से मुक्त विश्व की स्थापना के राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग में क्या बाधाऐं आती हैं ?

सुखमय संसार के उपरोक्त लक्षणों से यह समझना कठिन नहीं होना चाहिये कि अब आवश्यकता है नैतिक व मानवीय मूल्यों जैसे कि प्रेम, ईमानदारी आदि की । और सुखमय संसार की रचना के लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक हैं हमारी आपसी फूट, बंटवारे की प्रवृत्ति, स्वार्थ-परता जो कि हमारे स्वयं के, हमारे परिवारों के व हमारे देश अथवा समूहों के इर्द-गिर्द केन्द्रित है, और हमारी अनेकता एवं विभिन्नता का कारण है, मानवी मूल्यों एवं उस शक्ति जिसे प्रेम कहते हैं, की कमी जो कि पूरी मानव जाति को एक जुट कर सकती है और कि यह सम्पूर्ण संसार एक वृहद् परिवार है, इस भावना को भर सकती है ।

लंदन में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्‌घाटन समारोह में (बाएं से तीसरे) और चौथे भ्राता श्रीदथ रामफाल महासचिव कामनवेल्थ तथा लॉर्ड एन्नाल्ज, सदस्य हाउस ऑफ लॉर्ड, यू.के. उपस्थित हैं।

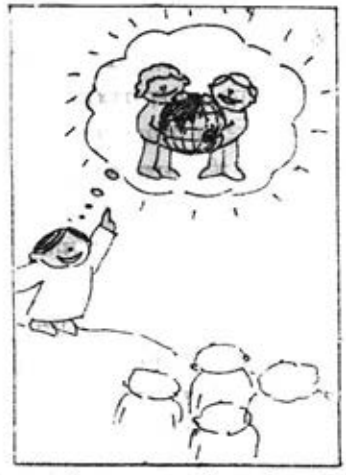

सहयोग की आवश्यकता

वक्त की पुकार है कि एक ऐसा प्रयास किया जाए जिससे मानव के मन में यह जागृति आए कि हमारी धरती एक है और हम एक परिवार के हैं । अब इस

"क्या जगत् की हालत बेहतर की जा सकती है ?"

आहा! यदि हम आपस में सहयोग करें तो सुखमय संसार ला सकते हैं।

प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है जो एकता व विश्व बन्धुत्व की भावना को जगाए । **हमें स्मरण रहे कि विश्व की समस्याओं का समाधान प्रेम व सहयोग के विश्व-व्यापी प्रयास में ही हो सकता है और कि समस्त विश्व में व समाज के सभी क्षेत्रों में शान्ति, सद्‌भावना व एकता फिर से स्थापित की जा सकती है । बशर्ते सभी लोगों के मन में निस्वार्थ भावना, सेवा व परस्पर सहयोग की भावना के बीज आरोपित कर दिये जायें क्यों कि संसार में साधनों की कमी नहीं है, कमी तो स्नेह और सहयोग की भावना की है ।**

और, सौभाग्य से यह एक शुभ लक्षण है कि पिछले कुछ वर्षों से लोगों ने परस्पर सहयोग की आवश्यकता को महसूस

नई दिल्ली: विज्ञान भवन में हुए अंतर्राष्ट्रीय स्नेह-मिलन का दृश्य। मंच पर (बाएं से) डॉ. बी.सी. पटेल, दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र के केंद्र के निर्देशक, ब्र.कु. जगदीश चंद्र सत्य प्रवक्ता ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय, न्यायमूर्ति ओजा, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी, प्रमुख ब्र.कु.ई.विश्वविद्यालय, श्री एच.के.एल. भगत, भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्री, श्री जगप्रवेश चंद्र सत्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली तथा ब्र.कु. दादी हृदयमोहिनी दिल्ली में सेवाकेंद्रों की इंचार्ज।

किया है। अब सम्पूर्ण विश्व यह स्वीकारने लगा है कि हम तब तक अपने निजी कार्यों को भी सिद्ध नहीं कर सकते जब तक हम एक-दूसरे के साथ मिल कर कार्य न करें व सारे विश्व के हित के लिये न सोचें।

सर्व का सहयोग आमन्त्रित है

इस कार्यक्रम के द्वारा लोगों को यह समझा कर समूचे विश्व का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है कि विलम्ब तथा एकता के साथ वे अपनी शक्तियों को सुखमय संसार के लक्ष्य को प्राप्त करने में लगाएँ। यह उन्हें इस बात की भी प्रेरणा भी देता है कि अगर वे सैद्धान्तिक पक्ष पर एक मत नहीं भी हो सकते तो नैतिक पक्ष व ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये तो एक मत हो जाएँ, वे एक जुट हो कर कार्य करें और कम से कम मतभेद के कारण विरोध व टकराव की वृत्ति को न अपनाएँ। एक सुन्दर संसार की सकल्पना करने एवं उसके निर्माण कार्य में सहयोगी बनने एवं स्वयं में परिवर्तन ला कर विश्व को परिवर्तित करने के लिये तथा

धरती मां इस विचार से प्रसन्न है।

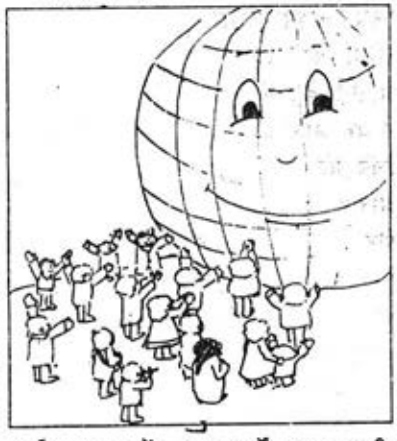

सभी व्यवसायों, आयु-वर्गों तथा सभी सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के लोगों को सम्मेलनों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं, स्नेह-मिलन, मेलों, उत्सवों इत्यादि में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया जाता है।

इस अभियान का लक्ष्य है कि जिन व्यक्तियों व संस्थाओं के विचार इस लक्ष्य से मिलते-जुलते हों और जिस भी प्रकार से वे इस सुखमय संसार के लक्ष्य तक पहुँचने में सहयोगी बन सकते हों, बनें।

यह अभियान इस विश्वास पर आधारित है कि हर व्यक्ति चाहे वह कोई भी हो और जहाँ भी हों, इस संसार को बेहतर बनाने में अपना यथाशक्ति योगदान दे सकता है।

अतः वैज्ञानिक एवं तकनीकज्ञ, धार्मिक नेताएँ, शिक्षा विद्, न्याय-विद् संचार-प्रचार सम्बन्धित व्यक्ति, राजनीतिज्ञ, राजदूत एवं समाज सेवक डाक्टर, व्यापारी व उद्योगपति, प्रशासक एवं अधिकारी, कला व संस्कृति के क्षेत्र में समर्पित लोग, यूनियन व अन्य संगठनों के लोग, मजदूर, बच्चे, महिलायें आदि

न्यूयार्क में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन दृश्य। केनन लॉयड केमन, अमेरिका में सलाहकार समिति के अध्यक्ष उद्घाटन भाषण करते हुए।

सभी व्यक्ति यथाशक्ति इस संसार को सुखमय बनाने में अपना योगदान दें। यह निश्चित है कि हर व्यक्ति में कोई-न-कोई कला, विशेषता या योग्यता होती है, जिसके द्वारा वह संसार को सुन्दर बनाने में अपना योगदान दे सकता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर कोई नई योग्यता या विशेषता तथा कुछ अधिक मानवीय मूल्यों को अपनाये जिसके द्वारा वह स्वयं को एवं समाज को बेहतर बना सके।

जैसा कि ऊपर विवरण दिया गया है कि नये विश्व की क्या विशेषतायें होंगी, इस अभियान के संयोजक स्वयं ही उसकी एक सूची बना सकते थे। और लोगों से इन मूल्यों व गुणों को धारण करने के प्रयास के लिये निवेदन कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि उन्होंने रचनात्मक कार्य-शालायें आयोजित कर लोगों को बेहतर संसार बनाने की संकल्पना करने व उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये कार्य-योजना बनाने के लिये प्रेरित किया।

संकल्पना का महत्त्व

अतः इस अभियान के आयोजकों का विश्वास है कि विश्व सहयोग की भावना को बढ़ाने के लिये ऐसे संगठित अध्ययन करने वाले ग्रुप की आवश्यकता है। जिनके द्वारा व्यक्ति व समूह पहले यह संकल्पना करे कि 'बेहतर विश्व' से तात्पर्य क्या है और कि यदि वे स्वयं अच्छे इन्सान बनें और नये विश्व को लाने में सहयोगी बने तो उस नये विश्व की क्या रूप-रेखा होगी। संकल्पना करने के महत्त्व को और अधिक बल देने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यह स्पष्ट है कि ऐसा करने से सबका चिन्तन एक दिशा में चलता है और व्यवहारिक रूप लाने से पहले उसकी मानसिक भूमिका तैयार हो जाती है। ऐसे प्रश्नों को उठाकर कि हमारा सुन्दर भविष्य कैसा होगा और ऐसा सुन्दर भविष्य बनाने के लिये हमें क्या करना चाहिये, यह अभियान लोगों की संकल्पना को एक सूत्र में बाँधता है। **संकल्पना करने में मदद करने से यह अभियान एक प्रेरणात्मक लक्ष्य के लिये मतैक्य होने में सहायता करता है। और इसमें विस्तृत रूप से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार जब लोगों में नये संसार की एक स्पष्ट संकल्पना आ जायेगी तो वे स्वयं के परिवर्तन के लिये और संसार को बेहतर बनाने के लिये एक कार्य-योजना बना सकते हैं।**

और फिर, यह अभियान प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी व्यवसाय, आयु या

सहयोग प्रारम्भ
सर्व सहयोग दे रहे हैं।

सामाजिक वर्ग का हो, में जागृति लाना है कि वह अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को एक बेहतर समाज बनाने में लगाये। इस प्रकार यह सभी सामाजिक, व्यवसायिक एवं हर आयु वर्ग के लोगों को नई सृष्टि के निर्माण के लिये विश्व सेवा का उत्तरदायित्व लेने हेतु प्रोत्साहित करता है।

इसमें व्यक्ति एवं संस्थायें

विश्व सहयोग के इस कार्य में प्रत्येक व्यक्ति एक प्रपत्र भर कर भाग ले सकता है। जिसमें वह नये विश्व की संकल्पना

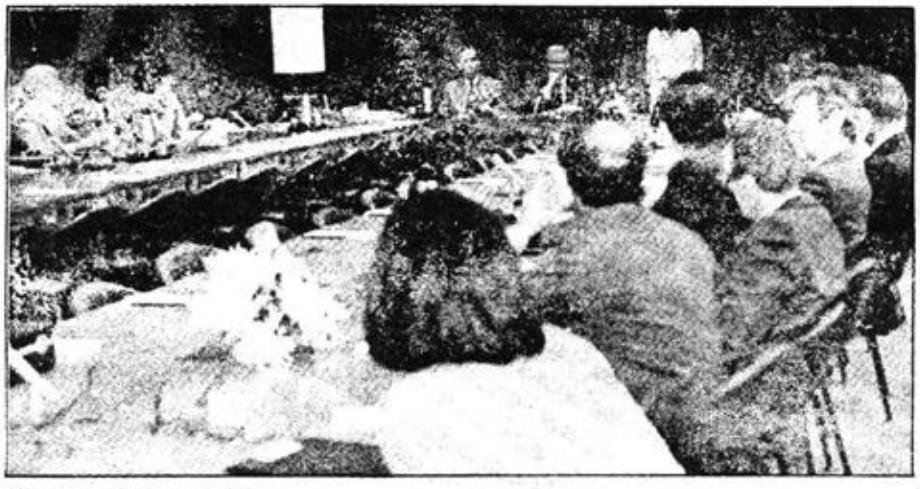

जेनेवा में *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्य-क्रम का उद्घाटन दृश्य*

अहमदाबाद *में गुजरात के राज्यपाल, भ्राता आर.के. त्रिवेदी जी 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी उनके बाईं ओर विराजमान हैं।*

के अपने विचार अभिव्यक्त कर सकता है, तथा अपनी उस संकल्पना को क्रियान्वित करने के लिये अपनी **कार्य योजना** का विवरण भी दे सकता है। फिर ये सभी विचार एवं क्रियाकलाप **'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक'** – जो रचनात्मक विचारों, संकल्पनाओं तथा

मॉरिशिसय *में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन दृश्य। चित्र में डॉ. पी.एन. नवाब सिंग प्रतिपक्ष के नेता, प्रधानमंत्री भ्राता जुग्नॉथ जी, महामहिम गवर्नर जनरल श्री वी.आर. रिंगादू, बी.के. नारी तुलसीदास, अध्यक्ष कार्यक्रम। पिछली पंक्ति में मिस्र, अमेरिका, चीन तथा ऑस्ट्रेलिया के राजदूत तथा राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्य उपस्थित हैं।*

कार्य योजनाओं का बैंक है और जिसमें किसी प्रकार की आर्थिक सहायता की अपेक्षा नहीं की जाती – में जमा कराये जाते हैं।

लोगों को एक स्पष्ट संकल्पना की रचना करने में सक्षम बनाने के लिये परिवारों, स्कूलों, कार्यस्थानों आदि में **संगठित अध्ययनों** (Creative Studies) के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है तथा विभिन्न व्यवसाय के लोगों को इस बात के लिये प्रेरित किया जाता है कि वे नये विश्व की अपनी **संकल्पनाओं** को लेख, कविता, कहानी, नाटक के रूप में व्यक्त करें या कोई चित्र, मॉडल आदि भी बनायें जिन्हें वे **विश्व सहयोग आध्यात्मिक**

जो इस अभियान का एक अंग है, में जमा करा दें।

लोगों में इस बात की चेतना लाने के उद्देश्य से कि वे अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनायें तथा अपनी व्यवसायिक योग्यता को विश्व को बेहतर बनाने के कार्य में लगायें, विभिन्न

बैंक, जो न तो एक व्यापारिक संस्थान है, न ही इसका लक्ष्य आर्थिक लाभ है और व्यवसाय के लोगों के लिये सम्मेलनों तथा गोष्ठियों का भी आयोजन किया जाता है। उनसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इस विषय पर लेख लिखें कि वह

तथा उनका व्यवसाय इस विश्व को बेहतर बनाने में क्या योगदान दे सकता है।

सामाजिक-आध्यात्मिक सेवा हेतु एक अनोखा अभियान

अपने लक्ष्य की स्पष्ट संकल्पना के बाद विश्व को बेहतर बनाने का अगला कदम है मानव के दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी, पारिवारिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक सामाजिक-आध्यात्मिक परिवर्तन लाना जिसका आधार जीवन का स्पष्ट लक्ष्य एवं प्रेम, मित्रता, अहिंसा जैसे नैतिक मूल्य हों।

इस अभियान के अन्तर्गत, सभी लोगों को व्यक्तिगत रूप से यह अवसर प्रदान किया जा रहा है कि वे अपने जीवन में सहयोग द्वारा परिवर्तन लायें और बेहतर

नेरोबी *में दी पॉप ग्रुप 'टैम मशरूम' ने प्रथम दान 'विश्व सहयोग बैंक' के लिए दादी प्रकाशमणि, प्रोजेक्ट की अध्यक्षा तथा किंगजले दबे (निर्देशक ... संघ केंद्र को दि...*

कोचीन: *केरल के राज्यपाल भ्राता पी. रामचंद्रन सम्मेलन का उद्घाटन भाषण करते हुए। उनकी दाईं ओर ब्र.कु. निर्वैर जी और बाईं ओर ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी तथा पूर्व न्यायाधीश भ्राता वी.आर. कृष्णा अय्यर विराजमान हैं।*

दुनिया कैसी होगी इसके लिये वे अपने जीवन के परिवर्तन के अनुभव तथा अपने रचनात्मक विचारों का योगदान दें। यह अभियान इस मूल सत्य पर जोर देता है कि "**हम बदलेंगे तो जग बदलेगा**"। इस प्रकार नई दुनिया की सामूहिक संकल्पनाओं तथा विश्व के कोने-कोने से व्यक्तियों को स्वपरिवर्तन के दृढ़ संकल्पों – दोनों को **विश्व सहयोग बैंक** जो कि इस अभियान का ही एक भाग है, में एकत्रित किया जायेगा।

स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

संक्षेप में इस अभियान का उद्देश्य यह है कि इस तथ्य के आधार पर लोग अपने जीवन में एक सकारात्मक व ठोस परिवर्तन लायें कि हमारे स्वयं के परिवर्तन का एक बड़े पैमाने पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा अर्थात् परिवार, समाज तथा विश्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। यह कार्यक्रम न केवल एक शक्तिशाली संकल्पना की रचना करने में सक्रिय साबित होगा, बल्कि इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न व्यवसाय के लोग इस बिन्दु पर भी विचार करेंगे कि एक बेहतर संसार को लाने में वे अपना सहयोग कैसे दे सकते हैं।

समाज के सभी वर्गों तक इस अभियान को पहुँचाने के लिये इस मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत कई देशों में समानान्तर रूप से अनेक प्रकार के आयोजन किये जा रहे हैं। कई कार्यक्रम सफलता पूर्वक कार्यान्वित किये जा चुके हैं और कई अभी समाज के सभी वर्गों – वैज्ञानिकों और तकनीकज्ञों, न्यायविदों, शिक्षा- विदों, प्रशासकों, कलाकारों, व्यापारियों और उद्योग-पतियों, महिलाओं, बच्चों, पिछड़ी हुई एवं अनुसूचित जातियों, अपंगों इत्यादि-इत्यादि – के लिये किये जाने वाली सूची में हैं। जैसे-जैसे ये अभियान समाज के विभिन्न अंगों में क्रियान्वित होता जाता है हम देखते हैं कि जन-साधारण एवं शिक्षित वर्ग में भी बहुत सुन्दर रूप से चल रहा है और समाज के सभी स्तर के लोगों पर इसका बहुत शक्तिशाली प्रभाव पड़ रहा है। जिससे यह स्पष्ट और सकारात्मक रूप से देखने में आता है कि हम अपने इच्छित लक्ष्य की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम (आस्ट्रेलिया में)

नई दिल्ली–में *'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी सम्बोधन करते हुए। उनके दाईं ओर तत्कालीन उड्डयन तथा पर्यटन मंत्री भ्राता जगदीश टाइटलर उपस्थित हैं।*

पेरिस में उद्घाटन दृश्य। मार्क हूपर वीणा वादक ने अपना प्रोग्राम रखा।

न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के उच्च अधिकारी तथा राजदूतों ने 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम में भाग लिया।

सर्व से सहयोग से सुखमय संसार नामक अभियान

अतः उतरोक्त उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये यह अभियान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जारी किया गया है जो कि संयुक्त राष्ट्र को समर्पित शान्ति का प्रचार करने वाला एक अभियान है और विश्व के ५० देशों में चल रहा है। इसका किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध नहीं है, न ही इसका लक्ष्य आर्थिक लाभ है और जो घरों, स्कूलों, विश्व-विद्यालयों, हस्पतालों व व्यापार केन्द्रों में फैल रहा है व सुखमय संसार के विचारों को उत्पन्न करने के लिये हर प्राणी का व्यक्तिगत रूप से सहयोग लेने के लिए ग्रुप स्थापित कर रहा है।

यह अभियान जो कि प्रत्येक देश में राष्ट्रीय सलाहकार समितियों द्वारा संचालित किया जा रहा है, २१ अप्रैल, १९८८ को 'हाऊस ऑफ लार्डस्' तथा अन्य कई देशों में साथ-साथ समानान्तर रूप से प्रारम्भ किया गया था। भारत में इसका प्रारम्भ सितम्बर १९८७ में किया गया था, परन्तु, एक अन्तर्राष्ट्रीय स्नेह-मिलन का आयोजन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में ३० अप्रैल, १९८८ को किया गया था।

अभियान के मुख्य संयोजक

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान है तथा जिसके विश्व के पाँचों महाद्वीपों मे ५० देशों में लगभग १७०० केन्द्र हैं और जिसका अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय भारत में, माऊण्ट आबू (राजस्थान) में है, इस अभियान का मुख्य संयोजक है। यह विश्व-विद्यालय एक गैर-सरकारी संस्थान के तौर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के सामाजिक व आर्थिक परिषद् का एक परामर्शक सदस्य है। इस संस्थान को १९८१ में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव द्वारा 'शान्ति-पदक' भी प्राप्त हो चुका है तथा बाद में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष सन् १९८६ में, इस विद्यालय द्वारा विश्व शान्ति के क्षेत्र में किये गये कार्य के फल स्वरूप इसे एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और पाँच राष्ट्रीय स्तर पर 'शान्ति-दूत' उपाधियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

इस अभियान को संयुक्त राष्ट्र संघ का सहयोग प्राप्त है। जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष के अपने (Logo) निशान के प्रयोग की स्वीकृति दी है और इस अभियान से संबंधित संयुक्त राष्ट्र संघ को समर्पित एक 'शान्ति-दूत' की उपाधि भी प्रदान की है। शान्ति अध्ययन ग्रुप (Peace Studies Group) जो कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष की कार्यकारिणी का उत्तराधिकारी है, यह भी इस अभियान को चलाने में अपना सहयोग व मार्ग-दर्शन दे रहा है।

अलिकन्टे में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन का दृश्य। (दाएं से) बी.के. किरण (मेरिया डेल केमिन) श्री जोस लुइस लस्सालेटर, मेयर, श्री अलफानसो एरिनस, डिप्टी मेयर।

Peace Messenger Initiative
Dedicated to the
United Nations

सन्देश

दादी प्रकाशमणि
प्रमुख ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्वविद्यालय
अध्यक्ष 'सर्व के सहयोग से
सुखमय संसार' कार्यक्रम

विश्व में मानव मात्र के हृदयों में आपस में प्यार और शान्ति से रहने की इच्छा है। हम सब एक बड़े परिवार के सदस्य हैं और आपसी अविनाशी सम्बन्ध जो हमें जोड़ता है, यह इच्छा जगाता है। जो चीजें हमें जोड़ती है वे उन सब से ज्यादा हैं जो हमें जुदा करने वाली हैं। हम एक समान ही धरती, आसमान आशाएं और लक्ष्य रखते हैं।

पवित्र विचारों और शुभकामनाओं की शक्ति से ऐसी तरंगें उत्पन्न होती हैं जो मानव के हृदय में आशाएं उत्पन्न करती हैं। पवित्र विचारों से सब हदें समाप्त हो जाती हैं जिससे हम फिर से भाई बहिनों का नाता जोड़ सकते हैं।

मानव अपनी हर इच्छा पूर्ण करने में समर्थ है। अपनी इच्छा के अनुसार विश्व को मानव बना सकता है। जब हम सम्मान, स्नेह और सहयोग से हाथ मिलाते हैं, हम सुखमय संसार बना सकते हैं। मानवता, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा के कारण टूट रही है। हालात ऐसे बन चुके हैं कि हमें भविष्य के लिये कोई दूसरा पथ चुनना पड़ेगा। सहयोग का ही रास्ता श्रेष्ठ है। धर्म, राजनीति तथा विज्ञान की शक्तियों का सकारात्मक ढंग से समन्वय हो सकता है। जब ये शक्तियां भिन्न-भिन्न दिशाओं में कार्य कर रही हैं तो इन से वर्तमान झगड़े उत्पन्न हो गए हैं। यदि हम इन्हें जोड़ना सीख जाएं तो नई सभ्यता की नींव रख सकते हैं।

हर मानव, हर धर्म, हर संस्कृति और हर जाति के गुण, विशेषताएं और सुन्दरता को देखने से ही आपसी सहयोग बढ़ सकता है।

सकारात्मक लक्ष्य चित्र, गुणात्मक भावना तथा शांति की शक्ति से हम सर्व विघ्नों को पार कर सकते हैं। हमारी आन्तरिक शक्तियां और धरती के प्राकृतिक खजानों से हम नए सुखमय संसार को बना सकते हैं। हम जितना ज्यादा नए विश्व का लक्ष्य चित्र सामने रखेंगे उतनी जल्दी ही वह नया विश्व हमारे समक्ष आएगा।

सन्देश

जावेर पीरिज़ डि क्युलर

मैं 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के आरम्भ का स्वागत करता हूं। इस अभियान की शुरुआत से 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष' से प्रेरित एक अति नए प्रकार की शान्ति के लिये प्रयास आरम्भ होंगे।

कई रास्ते हैं जिन्हें शान्ति के लिये अपनाना चाहिये। कुछ पर चलने के लिये थोड़े ही यात्री हैं। संयुक्त राष्ट्र में हमें चार्टर के अनुसार ही काम करना है और उन सरकारों के माध्यमों से काम करना है। इस पर चार्टर लोगों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हैं। हमें इस से सतत आभास रहता है कि हम सर्वत्र शान्ति के इच्छुक स्त्री, पुरुष एक ही रचना है। हम बहुत पहले ही मान चुके हैं कि लोग और व्यक्ति स्वयं अपना शान्ति का रास्ता अपनाएं। इसी कारण ही 'विश्व शान्ति वर्ष' मनाया गया था।

आप के इस कार्यक्रम से जनता और व्यक्तियों के लिये एक सीधा शान्ति का रास्ता खुलेगा। यह कार्यक्रम शान्ति के लिये रचनात्मक और क्रियात्मक ढंग से सोचने के लिये मजबूर करेगा। और भविष्य में विश्व शान्ति आ सकती है यह भी बताएगा। विचार तथा सुझाव जो आप इकट्ठा करेंगे और विश्व भर में लेन-देन करेंगे, उन से सर्व की शान्ति के लिये संयुक्त विचारधारा पैदा होगी।

विश्व में राष्ट्र फिर से स्व की स्वतंत्रता के बुनियादी सत्य को अब मान रहे हैं। साथ-साथ वे ये भी समझते हैं कि विश्व के सामने बड़ी से बड़ी चुनौतियां जैसे 'शान्ति' जिस का आपस में सम्बन्ध है अब जुदा नहीं की जा सकती। इस अवसर पर जब कि राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों में झगड़े हैं और वे समस्याओं से उलझ रहे हैं। समस्याओं के प्रति लोगों का एक प्रकार का विचार हो— आप का यह प्रोत्साहन महत्वपूर्ण है। मैं आशा करता हूं हर स्थान पर स्त्री, पुरुष आप की यह चुनौती स्वीकार करेंगे। मैं आप के इस साहसी और रचनात्मक कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

डॉ० बलराम जाखड़
अध्यक्ष, लोकसभा

नई दिल्ली
तिथि १५-१-१९८८

सन्देश

मुझे खुशी है कि ब्रह्माकुमारी अध्यात्मिक संस्था 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का आयोजन कर रही है।

गरीबी, भूख, नफ़रत तथा युद्ध के सतत खतरे ने वर्तमान विश्व को दु:खों और चिन्ताओं से भरपूर कर दिया है। हम ऐसा विश्व चाहते हैं जहां स्नेह, शान्ति, स्वतंत्रता, स्मृद्धि और प्रसन्नता हो। भिन्न-भिन्न देशों, सम्प्रदायों, संस्थाओं तथा व्यक्तियों में आपसी सहयोग और समन्वय से ही ऐसा विश्व सुनिश्चित है।

मैं इस नए कार्यक्रम 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' की सफलता के लिये शुभकामना करता हूं।

हस्ताक्षर
(बलराम जाखड़)

श्री एडवर्ड हीथ
भूतपूर्व प्रधानमंत्री, यू०के०

"विश्वशान्ति की स्थापना हम सभी की इच्छा है और 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' जैसे अभियान ही इस लक्ष्य तक ले जा सकते हैं।

कोरजन सी० एक्यीनो
राष्ट्रपति,
फिल्पाईन गणतंत्र

"मैं सर्व फिल्पाईन की जनता को ऐसे अभियान में भाग लेने के लिये आह्वान करती हूं। इस कार्यक्रम से हमें एक ऐसा अवसर तथा साधन प्राप्त होता है जिस से लोग आपस में मिलेंगे, मानव मूल्य बदलेंगे और नया संसार आएगा। मैं कार्यक्रम के आयोजकों की सफलता की कामना करती हूं। मुझे आशा है कि इस और अन्य ऐसे कार्यक्रमों से हमारी धरती पर स्थायी शान्ति आएगी।"

राजभवन
भोपाल-४६२००३
अगस्त १४, १९८७.

सन्देश

वर्तमान विश्व की हालत जो कि नफरत, चिन्ता आपसी सर्वनाश से भरपूर है, शान्ति की ओर कोई भी प्रयास सराहनीय है।

मुझे प्रसन्नता है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम बनाया है। मेरी शुभ इच्छा है कि आप का प्रयास विश्व में जीवन के उच्च मूल्य समझाने में सफल हो तथा सहयोग समन्वय को उत्पन्न करे।

शुभकामनाओं सहित

हस्ताक्षर
(के०एम० चान्डी)
राज्यपाल म०प्र०

मारग्रेट वाम्बुई केन्याता,
स्थायी केन्या के युनेप में
मिशन के पूर्व प्रतिनिधि

"संघर्ष और युद्ध विश्व में लाखों लोगों के लिए गरीबी और निराशा पैदा करते हैं। विश्व सहयोग तथा आपसी समन्वय हम सब जो भी हैं जहां भी हैं के लिये अति आवश्यक 'शान्ति का सन्देश' आईए हम सभी सुखमय संसार के लिये हाथ मिलाएं।"

"जगतगुरु स्वामी विष्णु देवानन्द सरस्वती ज्योर्तिमठ, बद्रिकाश्रम ने ब्रह्माकुमारी ई०वि० विद्यालय के मुख्यालय में हुई आध्यात्मिक विश्व शान्ति सम्मेलन के उद्घाटन सन्देश में विश्व शान्ति के लिये क्रियात्मक, आध्यात्मिक, शान्ति अनुभूति युक्त उपायों पर बल दिया। उन्होंने अपने शुभकामना सन्देश में कहा कि केवल आध्यात्मिक शक्ति ही विश्व में भाई चारा और एकता ला सकती है। सम्मेलन में अस्वस्थता के कारण न आ सके उन्होंने अपने संदेश में कहा कि मेरा शारीरिक रीति से सम्मेलन में आना सम्भव नहीं है परन्तु मैं मन से सम्मेलन के मध्य उपस्थित रहूंगा।"

सहयोग की अनुपस्थिति संघर्ष को जन्म देती है

विश्व भ्रातृत्व के सम्बन्ध को भूल जाने से ही स्नेह की भावना कम हो जाती है। और, जब स्नेह और सहयोग की कमी हो जाती है, तब संघर्ष उत्पन्न होता है। ये संघर्ष ही मानव जाति के दु:ख के मूल कारण हैं। अत: आइये, हम उस दर्शन अथवा ज्ञान को जानें जो सब में परस्पर सामञ्जय पैदा करे, स्नेह-सम्बन्ध को मज़बूत करे और जिसमें सहयोग की भावना को बढ़ाने की शक्ति हो, तब यह विश्व अवश्य सुखमय बन जाएगा।

सहयोग – एक जीवन-दर्शन और जीवन-विधि

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार योजना में 'सहयोग' शब्द पर अत्यधिक बल दिया गया है। यह ठीक ही है क्योंकि व्यक्तियों और संस्थाओं के सहयोग के बिना न केवल विश्व की वर्तमान स्थिति को नहीं सुधारा जा सकता बल्कि इसलिए भी कि विश्व की वर्तमान दु:खमय स्थिति का कारण ईर्ष्या, घृणा, सन्देह आदि हैं और ये तभी उपजते हैं जब सहयोग की भावना नहीं होती जैसे कि प्रकाश के न होने पर अन्धकार हो जाता है। अत: अगर हम सुख, शान्ति व हर्ष से भरपूर विश्व की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं तो हमें सहयोग की भावना को जागृत कर, उसे अपने दैनिक व्यवहार में बढ़ाना होगा। इस भावना को अग्रगण्य न भी सही तो इसे अपने जीवन-दर्शन और जीवन-पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण अंग तो बनाना ही होगा। इसके लिए हमें अपने मन में स्पष्ट रूप से जानना होगा कि अगर सचमुच जीवन जीने योग्य बनाना है तो उसमें सहयोग की भावना का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

स्नेह और सहयोग हर्षोत्पादक हैं

हर प्राणी जीवन में हर्ष चाहता है। हर्षित व श्रेष्ठ जीवन वही है जिसमें मेल-मिलाप हो, स्नेह हो, शान्ति हो। मेल-मिलाप और शान्ति तभी भंग होती है जब ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा एवं होड़ की दुर्भावनाएँ पनपने लगती हैं। और, ये दुर्भावनाएँ तभी पनपती हैं जब स्नेह और सहयोग का स्थान स्वार्थपरता ले लेती है। अत: खुशहाल जीवन के इस सिद्धान्त को कभी नहीं भुलाना चाहिए कि खुशी का आधार है सहयोग और सहयोग का आधार है स्नेह। अत: आइये, या तो हम स्वयं में स्नेह व सहयोग की भावनाओं को जागृत करें वर्ना तो सुखमय विश्व तथा खुशी से भरपूर जीवन के स्वप्न को भुला दें।

सहयोग : नैतिक-विज्ञान का क्रियात्मक पक्ष

'कर्मों में नैतिकता' का एक मुख्य नियम है – **दूसरों से आप वैसा ही व्यवहार करें जैसी आप उनसे अपेक्षा करते हैं।** अत: अगर हम चाहते हैं कि लोग हमारे सहयोगी बनें, हमें भी उनका सहयोगी बनना चाहिए। दफ्तरों में, व्यापार में, परिवार में-जीवन के हर क्षेत्र में हमें दूसरों के सहयोग की आवश्यकता होती है। उसके बिना जीवन आगे नहीं बढ़ सकता। जब हम किसी से सहयोग की इच्छा रखते हैं अथवा उससे सहयोग की आशा रखते हैं और वह हमारा सहयोगी नहीं बनता, तब हमें कितना बुरा लगता है और हम उदास हो जाते हैं। अत: हमें समझ लेना चाहिए कि जब हम किसी को सहयोग नहीं देते, तब उन्हें कैसा लगता होगा।

सहयोग की अनुपस्थिति अस्वस्थता को जन्म दे सकती है

अगर हम किसी को सहयोग नहीं देते और दूसरे भी हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं, तब हमारे आपसी सम्बन्धों में स्नेह की भावना खत्म हो जाएगी और फिर शुरू होगा एक-दूसरे पर आरोप लगाना, उनकी शिकायत करना, बुड़बुड़ाना, नाराज़गी प्रगट करना, झगड़ा करना। यह नहीं भी होगा तो आपसी बोल-चाल कम होती जाएगी और सम्बन्धों में विच्छिन्नता बढ़ती जाएगी। समय गुज़रने के साथ-साथ फिर ग़लतफहमी, प्रतिरोध, ईर्ष्या, घृणा,

अंतर्राष्ट्रीय संरक्षक कमेटी के कुछ सदस्य

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति
श्री जिमी कार्टर

इंग्लैंड के पूर्व प्रधानमंत्री
श्री कालाघान

फिलपाईन की राष्ट्रपति
कोरेजन सी. एक्विनो

श्री बी.डी. जत्ती
भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति

सन्देह और असुरक्षा की भावनाएँ पनपने लगेंगी और इसका परिणाम होगा मानसिक तनाव। यह मानसिक तनाव शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाएगा। अतः ज़रा सोचिए कि सहयोग न देने से आपको क्या लाभ होगा? कुछ भी नहीं न। बल्कि यह वातावरण में अमानवीयता लाकर उसे और ही दूषित और मलीन बना देगा तथा मानव जीवन एक बोझ और काँटों की शैय्या बन जाएगा।

असहयोग प्रतिरोध का उत्पादक

हमें यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि अगर हम सहयोग नहीं देंगे तो या तो प्रतिरोध, प्रतिस्पर्धा व प्रतिद्वन्द्वता बढ़ती जाएगी और अगर यह नहीं भी होगा तो अमित्रता, अशिष्टता, अप्रसन्नता, असन्तुष्टता, अनादर और विरोध की भावनाएँ तो बढ़ेंगी ही। कुछ समय के बाद फिर हमारे साथ भी वैसा ही व्यवहार होगा क्योंकि कर्म-सिद्धान्त के अनुसार जैसा हम कर्म करते हैं, वैसा उसका फल अवश्य पाते हैं।

स्नेह और सहयोग – सुरक्षा की चाबी

इन नकारात्मक वृत्तियों-जनित व्यवहार का आदान-प्रदान अविश्वास, अनुमान (सन्देह) व असुरक्षा को जन्म देता है। यह बहुत ख़तरनाक है। विश्व की महान् शक्तियों में आज जो अस्त्रों-शस्त्रों को बनाने की होड़ लगी हुई है, वह इन नकारात्मक वृत्तियों ही का परिणाम है और ये नाकारात्मक वृत्तियाँ आपसी स्नेह व सहयोग की भावना के न होने के कारण पैदा होती हैं। आज प्रतिदिन अरबों डॉलर व रूबल इन अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण पर खर्च किये जाते हैं क्योंकि हर देश स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा है। वे अपने पड़ोसी देश से असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं? वे ऐसा क्यों सोचते हैं कि पड़ोसी देश उनकी सीमा पर हमला कर उसे हड़प लेगा? इसका कारण है – मित्रता व सहयोग की कमी। इस बात से हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में शिक्षा लेनी चाहिए। हमें इस सिद्धान्त को याद रखना चाहिए कि सहयोग दो, सहयोग लो और आपसी सहयोग पर आधारित सम्बन्धों में अविश्वास, सन्देह और असुरक्षा का कोई स्थान नहीं है।

सहयोग के बिना जीवन निरर्थक

राष्ट्रों को और व्यक्तियों को स्वयं से पूछना चाहिए कि "वह भी क्या जीवन है जो पड़ोसी से भयभीत हुए-हुए जिया जाए?" क्या हम अपने ऐसे जीवन व सम्बन्धों को सफल मानें कि जिस जीवन का अमूल्य समय, धन, शक्ति, बुद्धि का व्यय हम अपनी जाति (मानव जाति) से स्वयं को सुरक्षित करने के लिए एक विशाल सेना अथवा सुरक्षा की सामग्री निर्माण करने में कर दें? यह कौनसा दर्शन है जो हमें अपने भाई-बन्धुओं से भयभीत करता है? आओ हम

हैदराबाद: राज्यपाल श्रीमती कुमुद बेन जोशी 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' अभियान का उद्घाटन करते हुए।

हाथ में हाथ मिलाएँ, मन से मन का रिश्ता जोड़ें और सहज व स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के सहयोगी बनें और विश्व को बेहतर बनाएँ। अब हमें इस सहयोग-दर्शन को अपनाना है।

मानव जाति एक कुटुम्ब है

वास्तव में हम एब एक परिवार हैं। हम केवल भाई-भाई नहीं बल्कि हम आत्माएँ, परमात्मा की सन्तान होने के नाते सचमुच भाई-भाई हैं। अतः हमारा आपस में स्वाभाविक स्नेह तथा उदारता एवं परोपकार की भावना होनी चाहिए। मानव जाति एक परिवार है। परिवार के सदस्य आपस में मिल बाँट कर वस्तुओं का उपयोग करते हैं। हर एक दूसरे की आवश्यकताओं को समझता है और उसके भले में दिलचस्पी लेता है। वे एक-दूसरे की सेवा करते हैं, सहयोग देते हैं और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ त्याग भी करते हैं। इससे स्नेह का वातावरण बनता है जो आपसी सम्बन्धों में मिठास भर देता है।

न्यायमूर्ति नगेंद्र सिंह
अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, हॉग

प्रो. पॉल डेविस
न्यूकेसल विश्वविद्यालय

श्री डॉ. डेविड ओवन, एम.पी.
लीडर
एस.डी.पी.

श्री यहूदी मेनयुहिन
संगीतकार, यू.एस.ए.

हम सब जानते हैं कि हर मानव के कुछ निजि संस्कार, निजि विचार और निजि आकाँक्षाएँ होती हैं। अतः यह स्वाभाविक है कि सब के व्यवहार और विचारों में समानता नहीं हो सकती। लेकिन यह विभिन्नता घृणा, असहयोग अथवा प्रतिरोध की जन्मदात्री तो नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम सब उस एक ही वृक्ष की शाखाएँ और पत्ते हैं जिस वृक्ष का बीज स्वयं परमात्मा है। अगर हम इस बात को तथा इस पर आधारित दर्शन को बुद्धि में रखें तो हम स्नेह व मेल-मिलाप से रह सकते हैं।

सहयोग एक झरने की तरह है

अगर एक व्यक्ति दूसरे को अपने भाई की तरह स्नेह करता है तो न केवल वह व्यक्ति उसका सहयोगी बनता है बल्कि वह उसकी स्वस्थ और निर्माणात्मक आलोचना को बुरा भी नहीं मानता और न ही उसकी दोष-दृष्टि होती है। स्नेह-सम्बन्ध की भावना उस झरने की तरह है जो आलोचना को अपने में समा लेती है। यह भावना सम्बन्धों को सुचारू रूप से बिना किसी झटकों, धक्कों अथवा दुर्घटनाओं को निभाने में मदद करती है।

सहयोग की अनुपस्थिति संघर्ष को जन्म देती है

विश्व भ्रातृत्व के सम्बन्ध को भूल जाने से ही स्नेह की भावना कम हो जाती है। और, जब स्नेह और सहयोग की कमी हो जाती है, तब संघर्ष उत्पन्न होता है। ये संघर्ष ही मानव जाति के दुःख के मूल कारण हैं। अतः आइये हम उस दर्शन अथवा ज्ञान को जानें जो सब में परस्पर सामञ्जस्य पैदा करे, स्नेह-सम्बन्ध को मज़बूत करे और जिसमें सहयोग की भावना को बढ़ाने व विकसित करने की शक्ति हो, तब यह विश्व अवश्य सुखमय बन जाएगा। यह ज्ञान अथवा दर्शन इस मन्तव्य पर आधारित है कि आत्मा के नाते हम सब आपस में भाई-भाई हैं।

एक समय था जब लोगों में दातापन की भावना प्रबल थी। वे देवी-देवता कहलाते थे। यह वह समय था जब विश्व अपने परम उत्कर्ष पर था। हमें याद रखना चाहिए कि दूसरों को देना अर्थात् अपने भविष्य के लिए जमा करना है क्योंकि जैसा बोयेंगे वैसा काटेंगे। लेकिन बड़े दुर्भाग्य की बात है कि पिछली कई शताब्दियों से मानव में लेने की भावना प्रबल हो गई है अर्थात् वह अपने स्वार्थ हेतु ही बरतता है। वर्तमान दुःखों अथवा व्यथाओं का यही कारण है। अब हमें 'दातापन अर्थात् परोपकार के दर्शन' को जीवन में अपनाना चाहिए तब विश्व सुखमय बन जाएगा।

सहयोग विरोध को क्षीण कर देता है

अगर कोई व्यक्ति स्वार्थी है और अपने स्वार्थ की पूर्ति करना ही उसका ध्येय है तो उसे समझ लेना चाहिए कि दूसरों के सहयोग से ही वह अपने लक्ष्य को पा सकेगा। अगर वह कृतज्ञ होकर सहयोग स्वीकार नहीं करता और स्वेच्छा व सहज स्वभाव से दूसरों का सहयोगी नहीं बनता तो वह लोगों को विरोध एवं संघर्ष करने के लिए उकसाता है और अपनी राह में खुद ही रोड़े अटकाता है। अतः अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए भी मनुष्य को सहयोग देना भी चाहिए और लेना भी चाहिए। अगर सहयोग मनुष्य का निजि स्वभाव नहीं है तो उसे इस गुण को एक नीति के रूप में भी अपनाना चाहिए और आखिर यह उसके जीवन-पद्धति का एक अंग बन जाएगा। यह सहयोग का मार्ग न्यूनतम विरोध का मार्ग होगा।

सहयोग विश्व-भ्रातृत्व की भावना पर आधारित हो

लेकिन आज ऐसे भी लोग हैं जो दूसरों के विरूद्ध, जिन्हें वे अपना प्रतिद्वन्द्वी समझते हैं अथवा विरोधी दल का समझते हैं, आपस में सन्धि कर लेते हैं। ये गुट वे धर्म, जाति, व्यवसाय आदि के आधार पर बनाते हैं जिससे उनके स्वार्थों की रक्षा हो और उन्हें बढ़ावा मिले। वे इसे ही आपस में सहयोग देना, यहाँ तक कि भाई-चारा समझते हैं। परन्तु आमतौर पर इस प्रकार का सहयोग संकुचित विचारधारा एवं जातीय, धार्मिक और वंश-सम्बन्धी संघर्षों को जन्म देता है। अतः हमें विश्व की सर्व आत्माओं का सहयोगी बनना चाहिए। यह किन्हीं संकुचित मान्यताओं पर आधारित नहीं बल्कि विश्व भ्रातृत्व की भावना पर आधारित होना चाहिए। यह सहयोग किसी प्रकार के विरोध, शोषण, अवसरवादिता, प्रतिस्पर्धा एवं संकुचित वृत्तियों को जनने वाला न होना चाहिए। दूसरे मानव के प्रति प्रेम और भाई-चारे के सम्बन्ध की भावना पर आधारित सहयोग विश्व को सुखमय बनाने का श्रेष्ठ साधन है।

श्री वी.आर. कृष्णा अय्यर
पूर्व न्यायाधीश
सर्वोच्च न्यायालय

मलकाम फरेज पूर्व प्रधान-मंत्री
आस्ट्रेलिया

बेरनैस स्नैक्स्टोन
लंदन विश्वविद्यालय

विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक

विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक अथवा 'विश्व सहयोग बैंक' (जैसा कि अनेक देशों में इसका यही नाम प्रचलित है) जो कि 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' नामक योजना का ही एक भाग है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा स्थापित किया गया। यह एक नये किस्म का बैंक है जिसमें लोग सुखमय संसार के बारे में अपनी संकल्पनाओं व कार्य योजनाओं के प्रपत्र जमा कराते हैं। यह बैंक न एक व्यापारिक संस्थान है न ही इसका लक्ष्य आर्थिक लाभ है।

इस योजना के अनुसार समाज के सभी वर्गों, एवं सभी व्यवसायों के लोग इसमें भाग ले सकते हैं। इस मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत लोगों से यह अनुरोध किया जाता है कि वे एक 'सहयोग फार्म' अथवा 'प्रदाता फार्म' भरें। इस फार्म में उन्हें सुखमय संसार की अपनी संकल्पना की अभिव्यक्ति करनी होती है। दूसरे शब्दों में, उनसे निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिये कहा जाता है: आपके स्वप्नों का सुखमय संसार कैसा होगा? वह संसार किस प्रकार का होगा? (i) वहाँ की जलवायु कैसी होगी? (ii) वहाँ के लोगों के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता क्या होगी? उनका व्यवहार कैसा होगा? (iii) उनके आपसी संबंध कैसे होंगे।

उनसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इस सहयोग प्रपत्र में यह भी लिखें कि सुखमय संसार की संकल्पना को साकार करने के लिये उनकी अपनी क्या कार्य-योजना है। उनसे पूछा जाता है कि (i) वे अपनी स्वउन्नति के लिये क्या करेंगे। अर्थात् अपनी आदतों व आपसी सम्बन्धों को सुधारने में, भोजन को सात्विक बनाने में एवं आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने में स्वयं में क्या परिवर्तन लाएँगे? वे मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर 'समाज की क्या सेवा करेंगे? (iii) क्या वे अपने विचारों को कोई कलात्मक रूप – कलाकृति, मॉडल, नाटक, कविता आदि-भी देंगे?

ये प्रपत्र फिर विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक में जमा करा दिये जाते हैं और उनमें दिये हुए विचारों को एकत्रित कर यह देखा जाता है कि वर्तमान समय अधिकांश लोगों के सुखमय संसार के विषय में क्या विचार हैं, ऐसा संसार बनाने के लिये वे क्या कार्य-विधि सुझाते हैं तथा इसके लिये वे किस प्रकार सहयोगी बनने के इच्छुक हैं।

देहली: 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' के उद्घाटन अवसर पर (बाएं से) ब्र.कु. ब्रिजमोहन, सम्पादक 'प्यूरिटी', ब्र.कु. चक्रधारी, न्यायमूर्ति नगेंद्र सिंह, ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. डॉन तथा ब्र.कु. जगदीश चंद्र जी।

अतः यह बैंक एक अनोखा बैंक है जो न एक व्यापारिक संस्थान है, न इसका लक्ष्य आर्थिक लाभ है, और न ही किसी प्रकार के धन का यह लेन-देन करता है। यह रचनात्मक विचारों, संकल्पनाओं, दृढ़ संकल्पों एवं कार्य योजनाओं का एक केन्द्र है। यह आम बैंकों से अलग किस्म का बैंक है जिसमें जमा कर्त्ताओं एवं प्रदाताओं के लिये नये प्रकार के लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं।

ब्रेन किन्गजले
अभिनेता, यू.के.

इस प्रकार के बैंक की आवश्यकता

इस बैंक की आवश्यकता को समझाने के लिये हमें यह याद रखना चाहिये कि विश्व का वर्तमान संकट मूलतः अथवा मुख्यतः एक नैतिक संकट, एक चारित्रिक एवं मूल्यों (गुणों) का संकट अथवा स्वयं के बारे में अज्ञानता से उत्पन्न हुआ संकट है। दिव्य गुणों का अभाव रूपी गरीबी आज विश्व-व्यापी गरीबी है। आज संसार से शुभ-भावना, प्रेम, सहन-शीलता, धीरज इत्यादि गुण तीव्र गति से लुप्त होते जा रहे हैं। अतः आज इनको सुरक्षित कर इनकी वृद्धि करना अति आवश्यक है। यह आध्यात्मिक बैंक इस आवश्यकता की पूर्ति का एक केन्द्र है। यह उन सभी के लिये एक ऐसे केन्द्र का

रामानंद सागर जी।

कार्य करेगा जो अपने जीवन में मानवी मूल्यों अथवा सद्गुणों का संग्रह करना तथा उनमें वृद्धि करना चाहते हैं। यह बैंक उन लोगों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता को पूरा करेगा जो किसी केन्द्र पर जा कर अपने सद्गुणों में वृद्धि करने का दृढ़ संकल्प करना चाहते हैं। अथवा स्व-उन्नति एवं समाज की सेवा के लिये अपना योगदान देना चाहिते हैं।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना का एक भाग होने के कारण इस बैंक का दीर्घकालीन उद्देश्य एक बेहतर विश्व की स्थापना करना है। एक ऐसा विश्व जहाँ मनुष्य तनाव-रहित तथा बोझ व चिन्ता-मुक्त हो। वह प्रसन्न-चित्त, स्वस्थ एवं सम्पन्न हो, उसकी सर्वशक्तियाँ पूर्णरूपेण विकसित हों, अन्य मनुष्यों से उसके संबन्ध अच्छे हों तथा प्रेम पर आधारित हों और उसके स्वभाव में दिव्यता का पूर्ण उत्कर्ष हुआ हो। बेहतर विश्व के इस स्वप्न को साकार करने के लिये इसके वर्तमान लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं:

१. लोगों को ऐसी स्पष्ट संकल्पना करने की प्रेरणा देना कि उनके स्वप्नों का सुखमय संसार कैसा होगा।
२. विश्व को बेहतर बनाने के लिये लोगों को वैश्विक रूप से सोचने तथा सामूहिक रूप से कार्य-योजना बनाने के लिये प्रेरित करना।
३. लोगों की संग्रहित की हुई संकल्पनाओं एवं उनकी कार्य-योजनाओं (action plan) की एक तालिका बनाकर बहुमत को जानना एवं सरकार, आम जनता एवं धार्मिक संस्थाओं को उस बहुमत से अवगत कराना।
४. लोगों के जीवन में शुभ-भावना, मित्रता और सहयोग की भावना को जागृत करने की प्रेरणा देना।
५. लोगों को नैतिक एवं मानवी मूल्यों जैसे सहनशीलता, ईमानदारी, शान्ति इत्यादि को अपनाने तथा उनका विकास करने की शिक्षा देना।
६. लोगों को इस बात की शिक्षा और प्रेरणा देना कि ऐसा पुरुषार्थ करें जिससे उनके जीवन में शान्त आये और वे दुर्गुणों एवं विकृतियों से मुक्त हों ताकि उनके स्वास्थ एवं खुशी में वृद्धि हो।

बैंक की कार्य-विधि

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि व्यक्तिगत तौर पर फार्मस् आदि भरवा कर लोगों को इस अद्भुत योजना में शामिल कराने के साथ-साथ सामूहिक रूप से उन्हें सहयोगी बनाने के लिये स्कूलों, परिवारों, आफिसों तथा संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित किया जाता है। और वहाँ रचनात्मक कार्य-शालाओं (Creative Workshops) का आयोजना किया जाता है। हर कार्यशाला में ५ या ६ लोग सुखमय संसार की सामूहिक रूप से सकल्पना करते हैं एवं उसे एक व्यवहारिक रूप देने के लिये कार्य-योजना अपनाते हैं। इन कार्य-शालाओं को चलाने अथवा इन समूहों को मार्ग-प्रदर्शना देने के लिये प्रशिक्षित संयोजक उपलबध हैं।

इसके साथ-साथ विभिन्न सम्मेलनों में लेखकों, ग्रन्थकारों एवं वक्ताओं से, कलाकारों से तथा विभिन्न व्यवसाय के लोगों से यह अनुरोध किया जाता है कि वे उसे अपनी संकल्पनाओं को लेख, कला-कृति, कहानी, कविता, सिद्धान्त-प्रति-पादक चित्र आदि रूप देकर उसे बैंक में जमा कराएँ ताकि उनके आधार पर एक संगठित एवं सामूहिक संकल्पना की रचना की जा सके।

कटक में उद्घाटन दृश्य। मंच पर भाता एस.एल. जैन, सहायक जनरल मैनेजर यूको बैंक, ब्र.कु. मृत्युजंय, भाता डी.एम. महन्ती, अध्यक्ष यूको बैंक उपस्थित हैं।

शिमला: श्री ठाकुर सिंह ठाकुर, स्वास्थ्य मंत्री हि.प्र. आध्यात्मिक बैंक का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर, कर रहे हैं।

बैंक के कार्य

१. अतः यह बैंक एक ऐसे केन्द्र की तरह कार्य करता है जहाँ व्यक्ति और संस्थाएँ शान्ति के लिये किये गये दृढ़ संकल्प के प्रपत्र को जमा करा सकें तथा अन्य लोगों के साथ अपने सम्बन्धों को सुमधुर बनाने के लिये अपनी रीति-नीति को बदलने अथवा विश्व को बेहतर बनाने के पुरुषार्थ करने से सम्बन्धित

हैदराबाद: ब्र.कु. निर्वैर जी बैंक का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर, कर रहे हैं। भाता एन. राजा रेड्डी, ऊर्जा मंत्री आ.प्र. मंच पर उपस्थित हैं।

अपने मानसिक संकल्प को भी प्रपत्र में व्यक्त करके दे सकते हैं।

२. इस बैंक में व्यक्ति एवं संस्थाएँ सम्मेलनों, सगोष्ठियों एवं संगठित अध्ययनों (Group Studies) के फल-स्वरूप प्राप्त निष्कर्षों, कविताओं, गीतों, चित्रों, सिद्धान्त-प्रतिपादक मॉडलों को जमा कराते हैं। जो कि लोगों में शुभ-

भावना, मेल-मिलाप, मित्रता और सहयोग की भावना को बढ़ाने की प्रेरणा के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

एक भिन्न प्रकार का बैंक

हमारे तथा अन्य कई देशों में सहकारी बैंक पहले से ही हैं। जो देश के किसी-न-किसी वर्ग को आर्थिक सहायता देते हैं, परन्तु यह विश्व-भर की भलाई के लिये 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' है। इस बैंक में सन्तुष्टता, नम्रता, धीरज, संहनशीलता, ईमानदारी आदि ही अनमोल रत्न हैं,जो एक ऐसा सुनहरी खज़ाना है कि जिस पर न तो कर (tax) लग सकता है और न ही कोई इन्हें चुरा सकता है और जब उसे इनकी आवश्यकता हो, प्रयोग कर सकता है।

अतः यह बैंक शुभ-भावना, दिव्य गुण और नैतिक मूल्यों के चालू खाते को बढ़ाने, शान्ति एवं प्रसन्नता के बचत खाते में वृद्धि करने एवं पवित्रता के स्थायी खाते को बनाये रखने में सहायक है।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सभी केन्द्र विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक की शाखा के रूप में कार्य करते हैं। भारत में इस बैंक का मुख्यालय इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के माऊण्ट आबू स्थित अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय के निर्देशन एवं निरीक्षण में कार्य कर रहा है और उसका पता है:—

विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक
२३, दार-उल-मुलुक,
पण्डिता रामाबाई रोड,
गामदेवी,
बम्बई-४०० ००७

जयपुर: इलाहाबाद बैंक के चेयरमैन, भ्राता जी.आर. तिवाड़ी, अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा, ब्र.कु. जगदीश चंद्र जी, ब्र.कु. रत्न मोहिनी जी, ब्र.कु. दादी जानकी जी उद्घाटन समारोह में भाग लेते हुए।

मद्रास: ब्र.कु. ब्रिज मोहन, भ्राता के.पी. बालाकृष्णानन 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के रैजीडेंट एडिटर तथा भ्राता श्रीपाल जी, आई.जी.पी. मद्रास उद्घाटन करते हुए।

भारतीय स्टेट बैंक के निदेशक ओमशान्ति भवन के समक्ष ब्र० कु० शशि बहिन के साथ।

सुखमय संसार के निर्माण के लिये लक्ष्य-चित्र, गुणात्मक चिन्तन, सहयोग की भावना त था रचनात्मक प्रवृत्ति का महत्त्व

अपने लक्ष्य या उद्देश्य का मन में स्पष्ट चित्र (vision) देखे बिना कर्म करना वैसा ही है जैसा कि नगर-निर्माण के उद्देश्य को लेकर नगर का चित्र बनाए बिना ही नगर बनाने का कार्य शुरू कर देना अथवा अपना गन्तव्य स्थान निश्चित किए बिना ही यात्रा प्रारम्भ कर देना अथवा आगे झांके बिना अंधकार में छलांग लगा देना।

इतिहास से हमें एक बात तो यह सीखने को मिलती है कि संसार में जितने भी अद्भुत् भवनों या इमारतों का निर्माण हुआ है, जितने भी वैज्ञानिक आविष्कार हुए हैं, जितनी भी संस्थाओं की स्थापना की गई है जितने भी सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक पद्धतियों या सिद्धान्तों को स्थापित किया गया है अथवा जितनी भी समस्याओं का हल सुझाया गया हो, उससे पहले उन्हें किन्हीं प्रतिभाशाली चिन्तकों ने अपने मन में उसका चित्र या उसका नक्शा देखा था, उन्होंने स्थूल नेत्रों द्वारा देखने- योग्य कृति बनाने से पहले उसे अपने मन के नेत्र से देखा था। उनकी कल्पना शक्ति ने उसकी झलक (Vision) पहले ही देख ली थी। अतः अब "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" नामक जो योजना है, उसके लिए भी हम ऐसे संसार की इच्छा रखने वाले सभी नर-नारियों को आमन्त्रित करते हैं कि पहले वे अपने मन में उस सुखमय संसार का कल्पना-चित्र बनायें, अपने लक्ष्य का स्पष्ट चित्र (Vision) अपने मन के चक्षु से देखें और फिर सोचें कि ऐसा सुखमय और सुन्दर संसार बनाने के लिए हम क्या सहयोग (Co-operation) दे सकते हैं।

निर्माण के पहले मानसी चित्र ज़रूरी—

जिन्होंने भी ताजमहल को, फ्रांस का ईफल टावर को, अमेरिका का स्टेच्यु ऑफ़ लिबर्टी (आज़ादी की देवी की मूर्त्ति) को या इंग्लैंड के हाउस ऑफ कामन्स को बनाने का कार्य किया या भाप वाले इंजन, टेलिफोन, टेलिविज़न, रेडियो, वाई-जहाज़, राकेट या अन्तरिक्षयान बनाने का कार्य किया वह इसलिए उन्हें बना सके कि बनाने से पहले उन्होंने उनका मानसी चित्र (Vision) देखा था। इसी प्रकार, एक "नये, सुखमय संसार" के निर्माण का कार्य करने से पहले हमारे मन में उसका चित्र (Vision) स्पष्ट होना चाहिए कि उस संसार का सारा ढाँचा अथवा उसकी सारी व्यवस्था कैसी होगी और कैसे उसका कार्य-कलाप होगा।

"आपका क्या विचार है?" स्पेन की मिरियम सुबिराना श्रोतागण से पूछते हुए।

अतः **"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार"** नामक जो योजना है, उसके अन्तर्गत भी लोगों से पहले यही कहा जाता है कि वे उस संसार की व्यवस्था का चित्र (Vision) अपने मन में स्पष्ट रूप से देखें। उस संसार के निर्माण के लिए वे पहला कदम यह लें। जैसा मनुष्य की सभी यात्राओं का प्रारम्भ तो पहले एक कदम ही से होता है, वैसे ही "सुखमय संसार" के निर्माण का पहला कदम है उसकी व्यवस्था का मानसी चित्र (Vision)। जो कोई भी यह पहला कदम लेगा, वही इसमें सहयोगी होगा।

एक बार लोगों को जब अपनी वांछित वस्तु या लक्ष्य का स्पष्ट और सुन्दर चित्र दिखाई दे जाता है तब उसे साकार रूप देने के लिए उनके भीतर एक अदम्य

बम्बई: *भ्राता एस.बी. चवन, तत्कालीन मुख्यमंत्री महाराष्ट्र अपना उद्घाटन भाषण देते हुए। भ्राता विनायक पाटिल, सदस्य विधानसभा तथा ब्र.कु. रमेश भी मंच पर उपस्थित हैं।*

भोपाल : कैमरे के सामने ब्र. क. महेन्द्र तथा ब्र. क. अवधेश, इंचार्ज मध्य प्रदेश जोन. आई. ए. एस. आफ़ीसर्ज़ के ग्रुप के लिए रचनात्मक शिक्षा क्लास का संचालन करते हुए

स्फुरण और रचनात्मक शक्ति का एक अद्‌भुत् संचार पैदा हो जाता है। अब उनकी अन्तर्निहित और प्रत्यक्ष शक्ति को एक स्पष्ट दिशा-निर्देश मिल जाता है। अत: अब **गुणात्मक विचार** (Positive Thinking) और रचनात्मक कार्य (Creativity) प्रारम्भ हो जाते हैं।

लक्ष्य-दर्शन (Vision) के बाद ही सहयोग का प्रारम्भ

जब किन्हीं लोगों का एक ही लक्ष्य होता है और उस लक्ष्य का वे अपने मन में जो चित्र देखते हैं, वह भी मिलता-जुलता-सा होता है, तभी उनमें परस्पर सहयोग का व्यवहार प्रारम्भ होता है। और, जब किन्हीं दृढ़-संकल्प वाले लोगों में परस्पर सहयोग और तालमेल होता है, तब उनका कार्य एक आन्दोलन अथवा अभियान की तरह शक्तिशाली हो जाता है और तब उनका लक्ष्य अवश्य ही उन्हें प्राप्त हो जाता है। परन्तु इस विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस सहयोग प्रक्रिया से न केवल सफलता और उससे खुशी ही प्राप्त होती है बल्कि इससे लोगों में सहयोग, स्नेह और मिलवर्तन की भावना दृढ़ होने के साथ-साथ उनके स्वभाव से ऋणात्मक-चिन्तन (Negative thinkings), परस्पर संघर्ष आदि भी, अलग कोई पुरुषार्थ किए बिना ही, समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार, जब किन्हीं लोगों का लक्ष्य-चित्र (Vision) एक-जैसा होता है, **तब उनमें सहयोग और मिलकर रचना करने की प्रवृत्ति स्वभाविक होती ही है।**

अत: हम यह कह सकते हैं कि **'लक्ष्य-चित्र'** (Vision), **'गुणात्मक चिन्तन'** (Positive thinking), **'सहयोग'** (Co-operation) और **'रचनात्मक प्रवृति एवं कार्य'** (Creativity) इस योजना के मुख्य साधन अथवा उपकरण हैं और मनुष्य के मन में मानवी एवं नैतिक मूल्यों का बीजारोपण, पारस्परिक सम्बन्धों में स्नेह, और इस मन्तव्य तथा इस भावना की पुष्टि करना कि समूचा मानव वर्ग एक परिवार है—ये ही इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं।

इन्हीं उद्देश्यों को सामने रखकर इस विशाल योजना के मुख्य विषय ("सर्व के

देहली: *(बाएं चित्र में) 'सुखमय संसार' कार्यशाला में बाएं से ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. चक्रधारी तथा ब्र.कु. शहजादी (नीचे चित्र में) प्राध्यापक तथा अन्य भाग लेते हुए।*

सहयोग से सुखमय संसार")के अन्तर्गत बहुत-से देशों में एक ही समय पर कई कार्यक्रम हो रहे हैं।

रचनात्मक कार्य-संगठन

उपरोक्त विभिन्न कार्य- क्रमों में से एक कार्यविधि, जिसमें सम्मिलित होने के लिए सभी को आमन्त्रित किया जाता है, का नाम है **'रचनात्मक कार्यशाला'** या **'रचनात्मक संगठन'** (Creative Groups)। इसमें कुछ लोग मिलकर "सुखमय संसार" का गठित मानसी चित्र (Collective Vision) बनाने के लिये विश्रान्ति-पूर्वक रीति से विचार-मंथन करते हैं और अपने-अपने मनोपरिवर्तन तथा व्यवहार-परिवर्तन की योजना भी बनाते हैं। हम यहाँ नीचे बतायेंगे कि यह संगठित विचार- मंथन कैसे होता हैं।

कोई भी व्यक्ति अपने निवास स्थान पर आठ-दस पड़ोसियों, सहकारियों या सम्बन्धियों को चाय या अल्पाहार आदि के लिए किसी सांयकाल को आमन्त्रित कर लेता है। तब इस संगठित विचार मंथन, एवं लक्ष्य-दर्शन (Vision) के लिए एक अनुभवी भाई या बहन 'कार्यवाही संचालक' (Co-ordinator) का कार्य करता है।

कार्यवाही संचालक (Co-ordinator) एक ड्राइंग बोर्ड पर 20" × 30" या 18" × 22" का कागज लगा लेता है और उसे संगठन के सामने इतने फासले पर रखता है कि उस पर जो कुछ लिखा जाए वे उसे पढ़ सकें।

कार्यवाही संचालक पहले तो संगठन के हरएक व्यक्ति से यह निवेदन करता है कि वे अपना-अपना परिचय दें। उसके बाद वे एक संगठित मानसी चित्र (Collective Vision) को बनाने के उद्देश्य से सभी को कहता है कि वे कुछ समय मौन में अपने मन में "सुखमय संसार" की व्यवस्था या ढाँचे का चित्र बनायें और फिर वे एक-एक प्रश्न का उत्तर दें।

पर्यावरण का मानसी-चित्र

तब कार्यवाही संचालक पहले एक प्रश्न पूछता है। वह पूछता है—"जिस सुखमय संसार की आप इच्छा करते हैं, उसका अपने मन में ध्यान-चित्र देखते हुए कृपया बताइये कि वहाँ का वातावरण अथवा पर्यावरण कैसा है? उसके क्या विशेष गुण हैं? इसके उत्तर में जैसे-जैसे एक-एक व्यक्ति बताता जाता है, वैसे-वैसे वह कार्यवाही संचालक ड्राइंग बोर्ड पर लगे कागज पर उनके उत्तर लिखता जाता है। इस प्रकार सभी के बीच चर्चा करने से एक बेहतर दुनिया के पर्यावरण के बारे में हमारे सामने एक स्पष्ट चित्र आ जाता है।

मानवी सम्बन्धों का चित्र

इसके बाद कार्यवाही संचालक पूछता है कि जो सुखमय संसार सभी चाहते हैं, उसमें लोगों के पारस्परिक सम्बन्ध कैसे होंगे? इसके उत्तर में भी हर-एक द्वारा बतायी हुई संकल्पना (Vision) को वह कार्यवाही संचालक एक दूसरे कागज पर लिखता जाता है।

आपका अपना स्वभाव और व्यक्तित्व कैसा होगा?

तब वह कार्यवाही संचालक हर-एक से पूछता है कि वह सोच कर बतायें कि ऐसे सुखमय एवं बेहतर संसार में उनका **अपना स्वभाव किन गुणों से युक्त होना** चाहिए अथवा ऐसी दुनिया में मनुष्य का व्यक्तित्व किन गुणों से युक्त होगा?

कार्य-योजना

इसके पश्चात् वह हर-एक से कहता है कि—"अब आप कृपया बताइये कि ऐसे सुखमय और बेहतर संसार के निर्माण के लिये आप **क्या सहयोग देंगे** अथवा क्या पुरुषार्थ करेंगे? आप अपने स्वभाव या संस्कारों में क्या परिवर्तन लायेंगे और दूसरों की क्या सेवा करेंगे? वह हर-एक को सुझाव देता है कि वह अपनी संकल्पना (Vision) और अपनी पुरुषार्थ-योजना (Action Plan) को एक फार्म, जिसका नाम 'सहयोग फार्म' है, में लिख कर दें।

परन्तु चर्चा का एक अनिवार्य नियम यह होता है कि इसमें भाग लेने वाले व्यक्ति

गुणात्मक चिन्तन के अनिवार्य नियम का पालन

इस संगठन का सारा वातावरण स्नेह और वैचारिक स्वतन्त्रता का होता है। किसी समस्या, उलझन या ऋणात्मक प्रवृत्ति (Negative trait) की बातें न कहें बल्कि इसके बजाए गुणात्मक विचारों की चर्चा करें। उदाहरण के रूप में, अच्छे संसार के विषय में यह बताने की बजाए कि उसमें लड़ाई, बेईमानी या पर्यावरण प्रदूषण नहीं होंगे, वे यह कहें कि एक बेहतर संसार वह है जिसमें कि लोग परस्पर-प्रेम और शान्ति से रहते हों, वें ईमानदार हों और वहाँ का वातावरण स्वच्छ हो।

संगठित लक्ष्य-दर्शन और सहयोग का विकास

इस प्रकार के अनौपचारिक और स्नेह के वातावरण में, इस संगठन के सभी व्यक्ति चर्चा के बाद ऐसा अनुभव करेंगे कि उनमें परस्पर सहयोग की भावना बढ़ी है और कि वे अब दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों को बेहतर बनाने का पुरुषार्थ करेंगे।

जिस फार्म में वे अपनी संकल्पना और अपनी पुरुषार्थ-योजना को लिखेंगे, वे उस फार्म को "विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक" (Global Co-operation Spiritual Bank) में जमा करा देंगे।

डाक्टर अथवा चिकित्सक संसार को बेहतर बनाने के लिये क्या सहयोग दे सकते हैं?

इस बात को अब अधिकाधिक महसूस किया जा रहा है कि स्वास्थ्य और रोग का केवल शारीरिक ही पहलू नहीं है बल्कि उसके मानसिक और समाजिक पहलू या आयाम भी हैं। अब डाक्टर, मनोवैज्ञानिक तथा मनश्चिकित्सक इस बात को अधिकाधिक महसूस कर रहे हैं कि अधिकाधिक रोग व्यक्ति में मानसिक कारणों से पैदा होते हैं। अब चिकित्सा व्यवसाय ने यह बात मान्य कर ली है कि लगभग ९० प्रतिशत शारीरिक रोगों के कारणों में से एक मुख्य कारण उस व्यक्ति में 'मानसिक तनाव' (stress) का होना है। इसलियेअब अधिकाधिक रोगों को मनः शारीरिक (Psychosomatic) रोगों की सूची में रखा जा रहा है।

रोग पर इस दृष्टि से देखने पर यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि हमारी अधिकांश समस्याएं – चाहे वे सामाजिक समस्याएं हों या आर्थिक अथवा राजनीतिक समस्याएं – जो कि गम्भीर मानवीय कष्टों को जन्म देती हैं, वे अस्वस्थता के किसी न किसी आयाम अथवा पहलू में जड़ें जमाए रहती हैं।

इसलिये यदि हम यह चाहते हैं कि यह संसार दुःख से मुक्त हो और सुखमय बने तो हमें ऐसे संसार का निर्माण करना होगा जहाँ लोगों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक, हर प्रकार का स्वास्थ्य हो। इसके लिये डाक्टरों को रोगी के शरीर के साथ-साथ उसके मन का भी इलाज उपचार करना होगा। उसे रोगी के तनाव-ग्रस्त तथा पीड़ाग्रस्त मन को भी शान्ति और राहत देनी होगी। यदि वे आज ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें कल ऐसी कला तथा ऐसे विज्ञान या सिद्धान्त तथा प्रयोग-विधि को जानना होगा जिस द्वारा रोग को अपनी जड़ों से, अर्थात् मनुष्य के मन ही से, निकाला जा सके और रोगी के चेतन अर्थात् आत्मन को शान्ति तथा सन्तुलन प्रदान किया जा सके। यदि वे ऐसा नहीं कर सकेंगे तो उन्हें रोगी को सलाह देनी होगी कि वो किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाए जो उसके मन को स्वस्थ कर दे और उसकी आत्मा को आराम तथा विश्रान्ति प्राप्त करा सके। यदि चिकित्सक सचमुच सुखी एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो उन्हें मन को तो स्वस्थ करना ही होगा। बेहतर विश्व बनाने में यह चिकित्सक का सहयोग होगा।

यह देखा गया है कि आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग से मनुष्य के दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा लक्षणों में और उसकी अभिवृत्तियों तथा जीवन-शैली में वान्छित परिवर्तन आता है। अतः व्यक्ति को स्वस्थ करने के लिये इनका भी प्रयोग होना चाहिये ताकि व्यक्ति की अभिवृत्तियों और जीवन-शैली इत्यादि में परिवर्तन हो। वर्ना, चिकित्सा द्वारा तो उसे केवल अल्पकाल के लिये ही राहत मिलेगी और फिर अपनी आदतों, अपने संवेगों और अन्तर्मन पर नियन्त्रण न होने के कारण वह फिर किसी व्याधि से ग्रस्त हो जाएगा।

यदि चिकित्सा व्यवसाय के लोग यह महसूस कर लें कि केवल भौतिक या शारीरिक, वास्तविकता ही वास्तविकता नहीं है बल्कि शरीर के अतिरिक्त एक अभौतिक अथवा आध्यात्मिक सत्ता भी है तो इससे उनका कल्याण होगा। उन्हें यह जानना और मानना चाहिये कि हर

ब्र० कु० डाक्टरों ने लगभग भारत के सारे राज्यों में चिकित्सा अभियान चलाया। यह चित्र उस समय का है।

शरीर में एक आत्मा का निवास है जो कि एक शाश्वत और सचेतन सत्ता है और शारीरिक मृत्यु के पश्चात भी उत्तरजीवी रहती है। अब चिकित्सा शास्त्र के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त होने वाले एक डाक्टरी साधन, जिसे 'सम्मोहनात्मक प्रतिगमन' (Hypnotic Olegoiessession) कहते हैं, तथा देह-से-बाहर किये गये अनुभव (Out-of-body experieneces), तथा पुनर्जन्म के व्यक्ति-वृत्तान्त (Case-histories) और शरीर से न्यारेपन के अनुभव, तथा मस्तिष्क एवं स्नायुमण्डल से सम्बन्धित अनुसन्धानों से भी यही प्रकट होता है कि प्रत्येक मानव शरीर में एक मानवात्मा होती है, योगाभ्यास द्वारा प्राप्त सदा विवेक तथा अनुभव भी इस बात का समर्थन करते हैं। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए 'स्व' को भौतिक शरीर से भिन्न सत्ता के रूप में जानना चाहिये और आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने चाहियें क्योंकि उनसे ही आत्मा स्वस्थ होती है तथा उसे बहुत समय से खोई हुई विश्रान्ति मिलती है।

मेहसाना ब्र० कु० डॉ० कोकिला डॉक्टरों तथा लॉयन्स क्लब के सदस्यों को सम्बोधित करती हुई। लॉयन्स क्लब के अध्यक्ष तथा नगरपालिका के उपाध्यक्ष बाईं ओर बैठे हुए हैं।

ब्र० कु० डॉ० मिधा डाक्टरों तथा 'रोटरी' के सदस्यों को सम्बोधन करते हुए।

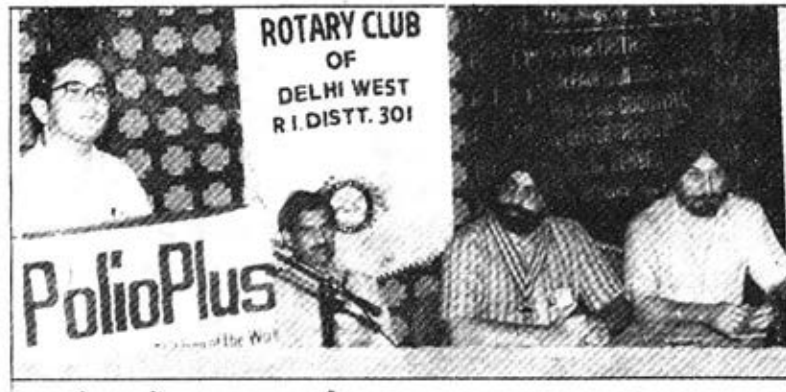

भुवनेश्वर में राज्यपाल भ्राता वी० एन० पाण्डे 'स्वास्थ्य चेतना अभियान' का शुभारम्भ करते हुए।

ब्र० कु० डॉ० ऊषा किरन स्वास्थ्य प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या करते हुए।

भूपाल में हुई सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन-2 का समापन समारोह का दृश्य।

धार्मिक या आध्यात्मिक नेता विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं?

इसके अतिरिक्त, लोग यह मानते हैं कि 'धर्म' ऐसे सिद्धान्तों और ऐसे व्यवहार का नाम है जिन से मनुष्य का जीवन पवित्र बनता है। लोगों में यह भी आस्था चली आती है कि धार्मिक नेता पवित्र होते हैं। अतः किसी भी 'धर्म' से सर्वप्रथम यह आशा की जाती है कि वह अपने अनुयायियों को एक ऐसे उच्च लक्ष्य का बोध करायेंगे और जीवन का उद्देश्य ऐसी रीति से समझायेंगे जिस से कि उनको पवित्र जीवन की प्रबल प्रेरणा मिले। अतः धार्मिक नेताओं से यह आशा रखना भी स्वभाविक है कि समाज की भलाई के उद्देश्य से अपने अनुयायियों को पवित्र जीवन बनाने की सबल प्रेरणा देंगे। और, निःसंदेह, वे यह कार्य उपदेश की बजाय अपने व्यावहारिक जीवन की महानता के द्वारा अधिक सफलता से कर सकते हैं।

धार्मिक नेता अपने सम्प्रदाय या उनके अनुयायियों की अन्तर्रात्मा के संरक्षक माने जाते हैं। लोग प्रायः यह मानते हैं कि उनका दैनिक जीवन धर्म/ग्रन्थों में बताये गए नैतिक नियमों का व्यावहारिक रूप दर्शाता है। सामान्य तथा अशिक्षित लोगों के लिए धर्म-नेता उस धर्म के स्थापक या पैगम्बरों के जीते-जागते उदाहरण अथवा मूर्तिमंत प्रतिमान (living models) होते हैं। उनके अनुयायी ऐसा मान कर चलते हैं कि किसी भी वर्तमान परिस्थिति में ये नेता वैसा ही आचरण अथवा व्यवहार करते हैं जैसा कि धर्म-ग्रन्थ या धर्म-स्थापक का आदेश है। वस्तुतः धर्म नेताओं से यह आशा की जाती है कि वे जनता में नैतिकता के संरक्षक बने रहेंगे और कि वे जन-जन के आध्यात्मिक कल्याण की जिम्मेदारी निभायेंगे। लोग यह मान कर चलते हैं कि उन नेताओं के उपदेश तथा व्यवहार में अथवा वचन और कर्म में अन्तर नहीं होगा। अतः ऐसी मान्यता होने पर यदि धार्मिक नेता ही अपनी नैतिक ऊँचाई या चारित्रिक महानता कायम नहीं रखते तो साधारण लोग अपनी भलाई के लिए किस की ओर देखेंगे, वे किस का सहारा लेंगे? यह ठीक ही कहा गया है कि यदि नमक ही अपना लवण-स्वाद खो बैठेगा तो फिर लोग वस्तुओं को नमकीन किस चीज से बनायेंगे? इसी प्रकार, यदि धार्मिक नेता अपनी नैतिक चेतना को गँवा बैठेंगे तो लोग अपनी अन्तर्रात्मा का मिलान या मुकाबला किससे करेंगे? अतः धार्मिक नेताओं से सर्वप्रथम और सर्वोपरि इस सहयोग की आशा की जाती है कि वे अपनी व्यवहारिक महानता से जनता की नैतिक पथ पर नेतृत्व करेंगे।

दूसरे, यह भी आशा की जाती है कि हरेक धर्म अपने अनुयायियों को ऐसा भी बोध करायेगा कि वे मानवीय स्तर पर दूसरे मनुष्यों से कैसा व्यवहार करे तथा आत्मिक स्तर पर दिव्य अनुभूतियाँ कैसे प्राप्त करें। अतः धार्मिक नेताओं से यह भी आशा की जाती है कि वे अपने अनुयायियों को परमपिता या सर्वोपरि शक्ति का अनुभव प्राप्त करने के योग्य बनायें ताकि इस अनुभूति से शान्ति और सन्तुष्टता प्राप्त करने के फल-स्वरूप वे दूसरे धर्मों के प्रति असहिष्णु तथा हिंसक न बनें। यदि धार्मिक नेता अपने अनुयायियों को शान्ति का अनुभव करने तथा शान्ति में रहने के योग्य बना सकें तो साम्प्रदायिक संघर्ष या दंगे होने का कोई कारण ही नहीं रह जायेगा।

सभी धार्मिक लोगों की यह मान्यता है कि 'धर्म' ईश्वरीय अथवा पवित्र उपदेशों का संकलन है और उन उपदेशों या शिक्षाओं का उद्देश्य मनुष्य को इस योग्य बनाना है कि वह प्रापंचिक, अपवित्र तथा भ्रष्टाचारी प्रभावों से बचा रह सके। धर्म का अस्तित्व ही इस लिये है कि वह मनुष्य को शिक्षा द्वारा इस योग्य बनाये कि वह घृणा, हिंसा, बदला लेने की प्रवृत्ति तथा प्रसिद्ध पाँच मनोविकारों का शिकार न बने। अतः किसी भी धर्म-विश्वासी या धर्म-प्रेमी व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह ईश्वरीय आज्ञा तथा ईश्वरीय गुणों के अनुरूप आचरण करने वाला होगा न कि आसुरी गुणों को व्यवहृत करेगा; वह भगवान का अनुयायी होगा, शैतान का नहीं। अतः धर्म-नेताओं को चाहिए कि वे अनुयायियों को यह बात पहले से भी अधिक प्रभावशाली तरीके से बतायें कि बदला लेना, लूटमार करना, आग लगाना या किसी की भी हिंसा करना ऐसे निष्कृष्ट कर्म हैं जो 'धर्म' की भावना के बिल्कुल विपरीत हैं और कि इन्हें तो बहुत उकसाहट तथा उत्तेजना होने के बावजूद नहीं करना चहिए। विश्व कि वर्तमान स्थिति में धर्म-नेता एक बड़ा सहयोग यह दे सकते हैं कि वे शंख ध्वनि कर के सभी को यह बतायें कि सम्पूर्ण मानव जाति एक परिवार है और कि सभी को शान्ति से जीवन जीने का अधिकार है और कि दयालु परमात्मा का यह पवित्र आदेश है कि, चाहे कोई किसी भी 'धर्म'

का मानने वाला हो, वह किसी भी मनुष्य की हत्या करने का निकृष्ट कर्म न करें।

धार्मिक नेताओं को चाहिए कि वे अन्य धर्म के नेताओं से भी चर्चा, वार्तालाप इत्यादि करें ताकि वे एक-दूसरे के धर्म को और अच्छी तरह समझ कर समीप आयें। धार्मिक मान्यताओं को आधार बना कर परस्पर वाद- विवाद या संघर्ष नहीं करना चहिए। उन्हें समझना चाहिए कि विभिन्न धर्म इस विश्व-वाटिका की विभिन्न पुष्प क्यारियाँ हैं।

वास्तव में सभी धर्मों की यह तो एक मूल मान्यता है कि प्रत्येक जीवित व्यक्ति एक सशरीर आत्मा है। इसी मूल बात को लेकर यदि धार्मिक नेता अपने अनुयायियों को आत्म-निष्ठ अर्थात् आत्मभिमानी बनाने का कार्य कर सकें तब तो विश्व की अधिकांश समस्याएँ ही हल हो जायेंगी। अतः धार्मिक नेता यह समझें कि उन द्वारा समाज की एक मुख्य सेवा यह है कि उन्हें लोगों की चेतना को प्रबुद्ध कर आत्मिक चेतना (Soul-consciousness) के स्तर पर लाना है। यदि हर व्यक्ति अपनी वास्तविकता को जान जाये, अपने स्वरूप को पहचान जाये, तब तो समाज-परिवर्तन का समूचा कार्य की आसान हो जाएगा क्योंकि आज अधिकतर समस्याएँ स्वयं को न जानने के कारण पैदा हुए संकट का ही तो परिणाम हैं।

माऊंट आबू : दादी प्रकाशमणि जी जोधपुर संभाग के आयुक्त भ्राता महता तथा उनके परिवार से मिलते हुए। बांई ओर भ्राता संजय दीक्षित, एस० डी० एम० भ्राता जगदीश जी तथा निबैर जी उपस्थित हैं।

श्री आशुतोष भार्गव, कलैक्टर सिरोही, सपरिवार दादी प्रकाशमणि जी से श्रीकृष्ण का चित्र लेते हुए

महिलाएं संसार को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकती हैं।

महिलाएं विश्व की जनसंख्या का 50 प्रतिशत हैं। महिला का माता, बहिन नर्स, शिक्षिका इत्यादि का रूप बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में महिला एक ऐसी धुरी है जिस के कारण परिवार का पहिया घूमता है, महिलाओं के अति महत्वपूर्ण पार्ट के कारण ही समाज का पहिया चल रहा है क्योंकि महिलाएं परिवार में तथा समाज में एकता लाने वाली शक्ति का कार्य करती हैं और महिलाएं ही बच्चों की प्रथम शिक्षिकाएं हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं में विनम्रता, सहनशीलता, प्रेम, दया, सेवा तथा त्याग के गुण विशेष होते हैं जिससे परिवार और समाज में एकता बनी रहती है और ये गुण समाज में नैतिक मूल्यों को कायम रखते हैं। यदि यह कहा जाए कि समाज की अवस्था तथा माप दण्ड महिला वर्ग को दिए गए महत्व पर आधारित है तो अतिश्योक्ति न होगी। अतः महिलाएं सुखमय संसार बनाने में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं।

मॉरीशियस पोर्ट लुईस में महिला रैली निकाली गई। ब्र० कु० चन्द्रा तथा श्रीमती एस० जुगनाँथ, प्रधानमंत्री की धर्म पत्नी ने इसकी अगवानी की।

कोइम्बुतोर में महिला सम्मेलन

भोपाल में ब्र० कु० अवधेश, ब्र० कु० नलिनी तथा मंजू राय, मंत्री ग्राम विकास महिला गोष्ठी को सम्बोधन करती हुई।

भावनाओं में सुधार

यदि हम सुखमय संसार चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें स्त्री पुरुष के सम्बन्धों में सुधार लाना होगा, इसके लिये शान्तिमय जीवन व्यतीत करने के लिये स्त्री, पुरुष को आध्यात्मिक शिक्षा तथा क्रियात्मिक अभ्यास कराने की आवश्यकता है। जब तक स्त्री पुरुष में एक दूसरे के प्रति भावनाओं में श्रेष्ठता नहीं आयेगी तब तक समाज का जीवन स्तर ऊंचा नहीं उठ सकता। आपसी भावनाओं में श्रेष्ठता लाने के लिये दोनों में आध्यात्मिकता लाने की आवश्कता है तक स्त्री पुरुष एकमत हो कर घर को घर बना कर रहें तथा जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

शिक्षाविद संसार को बेहतर बनाने के लिए क्या सहयोग दे सकते हैं?

शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का मुख्य साधन है । शिक्षा से यह आशा की जाती है कि गतकाल, वर्तमान और भविष्य के बीच सेतु का काम करेगी, अर्थात् वह अतीत काल की ज्ञानोपलब्धियों को वर्तमान में देकर भविष्य तक पहुँचायेगी । शिक्षा मनुष्य को न केवल यह बोध कराती है कि अतीत काल के साथ उसका क्या सम्बन्ध था बल्कि वह इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि वर्तमान काल ऐसा क्यों है जैसा कि वह है और कि अब भविष्य को कैसे उज्जवल बनाया जा सकता है । उसे मनुष्य को न केवल गत युगों का प्रज्ञान तथा अनुभव देना होता है बल्कि वर्तमान जीवन में भी सफल होने के योग्य बनाना होता है । तथा भविष्य के लिये भी आशा देनी होती है । उसे मनुष्य में न केवल ऐसी योग्यताएँ उत्पन्न करनी होती हैं और ऐसी अन्तर्निहित संभावनाएँ विकसित करनी होती हैं जो कि उसे समस्याएँ हल करने में सक्षम बनाये बल्कि वह उसे मनुष्य को सन्तुष्टता एवं कृतार्थता का अनुभव कराने में भी सहायक होना होता है । ऐसी शिक्षा सुखमय संसार बनाने में सहायक होती है ।

हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि हमेशा से शिक्षा का एक प्रधान कार्य मनुष्य के चरित्र को महान बनाना माना गया है । शिक्षा में इस विषय का बोध कराया जाना ज़रूरी है कि मनुष्य अपने संवेगों का उचित उपयोग कैसे किया करे और कि वह संवेगों पर नियन्त्रण तथा उनका शुद्धिकरण कैसे करे ।

किन्तु चरित्र-निर्माण तथा संवेगों के नियन्त्रण की कला का विकास तब तक नहीं किया जा कसता जब तक कि शिक्षा नैतिक मूल्यों पर आधारित न हो । इसलिए शिक्षा में ऐसे तत्त्व होने चाहिएं जिन से मनुष्य को सार्वजनिक नैतिकता तथा निजी जीवन के स्वीकृत मानदण्डों (norms) का ज्ञान हो और उसे यह भी मार्ग-दर्शन मिले और वह मनुष्य को यह भी समझा दे कि वह अपने आन्तरिक गुणों का सुधार कैसे कर सकता है और अपनी नैतिकता तथा आध्यात्मिकता को महान कैसे बना सकता हे । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जीवन के नैतिक तथा आध्यात्मिक अनुभव इन्द्रियों द्वारा होने वाले अनुभवों से कोई कम महत्त्वपूर्ण तथा कम मूल्यवान नहीं होते । जिस मनुष्य को ये अतीन्द्रिय अनुभव नहीं होते वह मानों आधा ही जीवन व्यतीत करता है अथवा केवल दुःखात्मक या दुःख मिश्रित सुखात्मक या दुःखात्मक सुखात्मक जीवन व्यतीत करता है अर्थात् उसके जीवन में दुःख अवश्य होता है ।

इस बात पर जोर दिया जाना चाहिये कि शिक्षा जीवन को बेहतर बनाने के लिए और उच्चतर तथा उदात्त अनुभवों के लिए होनी चाहिए और वह ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जिससे मनुष्य का जीवन प्रबुद्ध तथा समृद्ध बने । यदि शिक्षा प्राप्त करने पर भी मनुष्य का जीवन जीने के योग्य न रहे तो उस शिक्षा का मूल्य अथवा लाभ ही क्या है ? यदि शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत, सज्जन तथा आत्म-वेत्ता नहीं बनाती और न्याय-युक्त तथा पक्षपात रहित नहीं बनाती और यदि वह मनुष्य को यह दृष्टि नहीं देती कि जीवन मूल्यवान है और कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा है और यदि वह मनुष्य के उन गुणों और मूल्यों का संवर्धन नहीं करती जिससे मनुष्य विचार शील, सहयोगी और कृपाशील बने तो वह 'शिक्षा' नहीं है बल्कि सूचना (Information) मात्र है या केवल अंकों-अक्षरों का स्टोर-मात्र है। अतः कुछेक सामाजिक नैतिक तथा मानवीय मूल्य शिक्षा की नाभिक्र के रूप में होने ही चाहिएँ, फिर उसके अतिरिक्त विज्ञान, गणित, भूगोल आदि विषय तो हों ही ।

संसार को सुखमय तथा बेहतर बनाने के लिये जन-प्रसार के साधन क्या सहयोग दे सकते हैं?

एक बात जो ध्यान में रखी जानी चाहिये और जो कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, यह है कि माध्यम जिस सामग्री का त था जिस तरह प्रसार-प्रचार करता है उसका प्रभाव लोगों के आचार और व्यावहार पर पड़ता है। गोया माध्यमों की अन्तर्वस्तु (Contents) का जन-जन के अवान्छनीय तथा विपथगामी व्यवहार के साथ निश्चित सम्बन्ध होता है। प्रचार-साधन अथवा माध्यम अधिक से अधिक श्रोताओं, पाठकों या दर्शकों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए, उन्हें मनोरंजन सामग्री प्रदान करते हैं या ऐसी अन्य प्रकार की बातें देतें है जोकि अधिक से अधिक लोगों को सन्तुष्ट करे तथा उन्हें देखने या सुनने के लिये लालायित करें, चाहे वे बातें या वह सामाग्री निम्न या हीन कोटि की क्यों न हो। समाचार-पत्र फिल्में, टेलिविजन या पत्रिकाएं ऐसी घटनाएं या कहानियां पेश करती हैं, जिनमें हिंसा-प्रवृत्ति, क्रूरता, लैंगिगता, वासना, सस्ते और भद्दे मनोविनोद या निम्न स्तर के उत्तेजनापूर्ण घटनाओं को उभारा जाता है। वे ऐसी सामग्री जुटाने की नीति को भी उचित ठहराते हैं।

जैसा कि सुविदित है, जन- प्रसार या जन-सम्पर्क साधनों का मुख्य कार्य विचारों, चित्रों या बिम्बों का प्रसार करना है। परन्तु माध्यमों के कार्यकर्त्ताओं को यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि इस कार्य के निष्पादन में माध्यम को सूचना एवं समाचार- संग्रह के प्रसार के जरिये विश्व के लोगों में एकता लानी चाहिये और उन्हें विभाजनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा नहीं देना चाहिये। उनके रिपोर्ट, रिले (Relay) चित्रण ऐसे हों कि लोग अत्युत्तेजित न हों, वे जनता की मुख्य धारा से अलग भी न हो जाएं और लोगों की नजरों में कोई विशिष्ट वर्ग गिर भी न जाए। माध्यमों को ऐसा न्यायालय नहीं बन जाना चाहियें जो कि न्याय के सिद्धान्तों का पालन किये बिना ही लोगों, व्यक्तियों, और संस्थाओं के बारे में अपने अन्तिम निर्णय देता रहे।

मद्रास में जन-प्रसार के साधनों के प्रतिनिधियों की गोष्ठी में सम्पादक तथा अन्य मंच पर उपस्थित हैं।

माध्यमों को चाहिये कि वे व्यक्तियों या संस्थाओं को उचित अवसर दे ताकि वे अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रख सकें। उन्हें ऐसे अवसर दिये बिना निर्णय देने से बचना चाहिये। माध्यम को चाहिये कि वे तथ्यों को विकृत न करें। उन्हें संस्थाओं तथा व्यक्तियों की छवि को बिगाड़ना नहीं चाहिये या पिछली बातों का सहारा नहीं लेना चाहिये तथा समाज के नैतिक नियमों पर प्रहार नहीं करना चाहिये।

माध्यमों का सर्वोत्तम सहयोग यह होगा कि वे संकटग्रस्त मूल्यों पर विचार करें, प्रबोधन के मूल्य पर जोर दें और जनता को यह बतायें कि प्रेम, मैत्री, अहिंसा तथा दयालुता-जैसे मूल्यों तथा विश्व भ्रातृत्व की संकल्पना के आधार पर एक नई विश्वे व्यवस्था अथवा सुखमय एवं बेहतर संसार का निर्माण किया जा सकता है।

सहारनपुर में पत्रकार सम्मेलन-जनप्रसार साधनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

दुनिया को बेहतर बनाने के लिए प्रशासक अथवा प्रबन्धक वर्ग का सहयोग

एक प्रशासक, प्रबन्धक अथवा व्यवस्थापक ही को अधिकारियों तथा कर्मचारियों की एक ऐसी कार्य-व्यवस्था बनानी पड़ती है कि सारा कार्य झंझावात या अनबन के बिना और आपसी तालमेल के साथ होता रहे तथा सभी कार्यकर्त्ता एक टीम की तरह और अपने-अपने कार्य से खुश रहते हुए कार्य करते चलें। उसे यह भी ध्यान देना पड़ता है कि प्रशासन का सारा ढाँचा सफ़ाई, सच्चाई और ईमानदारी से कार्य करता हो। वह झटकों के बिना स्निग्धता से और समय पर कार्य करता रहे। उसे दूसरों का नेतृत्व करते हुए उन्हें एक अल्पकालीन लक्ष्य तक पहुँचाना होता है, समझना होता है, उनकी योग्यताओं के लिए उनकी सराहना करनी होती है और उनकी कमियों को भी जानना होता है तथा उनके कार्य में जो समस्याएँ आएँ, उन्हें हल करने के लिए उन्हें सहयोग भी देना होता है।

स्पष्ट है कि प्रशासक अथवा व्यवस्थापक का कार्य ही ऐसा है कि उनके लिए बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्तित्व की आवश्यकता है। प्रशासक में मस्तिष्क एवं भाव पक्ष के बहुत ही गुणों का होना ज़रूरी है क्योंकि उसे मनुष्यों से व्यवहार करना होता है और उन मनुष्यों के दृष्टिकोण, उनकी संवेदनशीलता तथा उन की संवेगात्मक स्थिति भिन्न-भिन्न होती है। उनका एक प्रकार का सहयोग अपना ऐसा व्यक्तित्व बनाना होगा।

प्रशासक में स्थायी शान्ति तथा आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता

प्रशासक की बहुत-सी जिम्मेवारियों और उसके महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण उस पर दबाव भी डाले जाते हैं और उसके अन्तर्मन से भी उस पर दबाव पड़ता है। अतः हो सकता है कि इन सब का उस पर प्रभाव पड़े। इसलिए उसे ऐसी योग्यताओं से सुसज्जित होने की ज़रूरत है जिनसे उसे मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति मिले जो उसके लिए खुशी के झरनों का काम करे। तभी उसके जीवन में आश्वस्त रूप से स्थायी शान्ति का अस्तित्व हो सकता है।

प्रशासक स्थिति में सुधार कैसे ला सकता है?

ऊपर हमने जिस शक्ति और खुशी की बात कही है, उस की प्राप्ति ध्यानयोग अथवा बुद्धियोग (Meditation) द्वारा ही हो सकती है। आध्यात्मिक शक्ति का यह किला नैतिक गुणों, मानवी मूल्यों और आध्यात्मिक महानता ही की एक चट्टान पर बन सकता है। एक आध्यात्मिकता की पुट वाला ही प्रशासक नम्रता और शालीनता तथा शान, कोमलता और दृढ़ता, प्रेम और नियम तथा खुशमिज़ाजी और गम्भीरता आदि-आदि का सन्तुलन बनाये रख सकता है। केवल एक कर्मयोगी अर्थात् योग-युक्त हो कर कर्म करने वाला व्यक्ति ही लोगों और मामलों को कुशलता और दिव्यता से निभा सकता है और ऐसे ढंग से कार्य कर सकता है कि जिनके साथ वह बर्ताव करता है, उनके मन के प्रेम तक भी वह पहुँच पाये और सभी को खुशी भी देता चले। ऐसा आत्म-वेत्ता प्रशासक ही मानव मात्र के प्रति अपनी सहानुभूति, प्रेम तथा चरित्र की महानता से दूसरों में भी विश्वास और प्रेम को जागृत कर सकता है। सहज राजयोग के अभ्यास से उसके मन में स्पष्टता, एकाग्रता, स्थिति को भाँपने की शक्ति, तुरन्त निर्णय और अन्तः स्फुरण की शक्ति आती है। ऐसा ही व्यक्ति घृणा, द्वेष, घटियापन आदि से रहित भी होता है। ऐसे ही व्यक्ति के साथ काम करने से लोग खुशी का अनुभव करते हैं। उन्हें यह गर्व होता है कि उनकी संस्था का ऐसा उच्च प्रशासक है। वे उस से स्नेह करते तथा उसके गुणों की चर्चा किया करते हैं।

नई दिल्ली : जीवन बीमा निगम के संभागीय कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों के मध्य जर्मनी की ब्र० कु० डॉ० हाइडी तनावमुक्त जीवन विषय पर भाषण कर रही हैं।

राजनीतिज्ञ विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं?

...न राजनीतिज्ञों का सबसे बड़ा सहयोग यह होगा कि यह याद रखें कि उन्हें जो पद, सम्मान सत्ता या अधिकार प्राप्त हुए हैं, वे लोगों ने उनमें यह विश्वास रखकर उन्हें प्राप्त कराये हैं कि वे देश और समाज को बेहतर बनायेंगे ? बे ऐसी नीतियाँ और योजनाएँ बनाकर कार्यान्वित करेंगे कि जिनसे मेहनत- मजबूरी करने वाले लाखों-करोड़ों लोगों की स्थिति बेहतर होगी । अतः सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञों को यह याद रखना चाहिए कि लोगों ने उन्हें सत्ता इसलिये दी है कि वे समाज के निम्नतम, निर्धनतम तथा निराश्रित और निर्बल वर्गों की भी आशाओं तथा आकांक्षाओं को साकार एवं पूर्ण करें ।

दूसरे शब्दों में यदि राजनीतिज्ञ सत्ता, पद और प्राधिकारों के बारे में अपनी धारणा को मोड़ कर अब यह दृष्टिकोण अपनायें कि वे उनके अपने लाभ या स्वार्थपूर्ति के लिये नहीं है बल्कि देश तथा मानव समाज की सेवा के लिये, अथवा 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' है तो विश्व को बेहतर बनाने में यह उनका विशेष सहयोग होगा ।

अतः उनकी राजनीतिक विचारधारा चाहे जो भी हो, यदि वे इस सरल सिद्धान्त को अपनी नीति का आधार बना लें कि उनका कार्य जनता की समस्याओं को हल करने में सहायक होना, उनकी रहने-सहने की स्थितियों को बेहतर बनाना, उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा करना, विधि तथा व्यवस्था (Law & order) और सुरक्षा को बनाये रखने का पूरा यत्न करना तथा अपने चुनाव-क्षेत्र के लोगों के विचारों को विधि-विधान पूर्वक निश्चित चर्चा-मंच पर व्यक्त करना है, तो यह भी एक सहयोग होगा । उन्हें यह सोचना चाहिये कि राष्ट्र को अपने लक्ष्य की ओर ले जाने के कार्य के लिये तो वे जनता के नेता हैं परन्तु जनता के कष्टों को निवारण करने के कार्य में वे उनके सेवक हैं ।

इसलिये राजनीतिज्ञों का सबसे बड़ा सहयोग यह होगा कि वे अपनी नीतियों को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय पर आधृत करें और, सबसे बड़ी बात यह है, कि वे अपने कार्यकलापों को उच्च नैतिक एवं चारित्रिक मानदंडों (standards) पर आधारित करें । यदि वे बे-दाग होंगे और असंदिग्ध चरित्र के होंगे तो लोग उनसे प्रेरित होकर उनके नेतृत्व का अनुसरण करेंगे । यदि राजनीतिक नेता स्वयं अपने देश के कानून के अनुसार चलेंगे तथा अपने सार्वजनिक जीवन और निजी जीवन में उच्च मानदंडों को कायम रखेंगे तो वे राष्ट्रीय जीवन को स्वच्छ बनाने तथा राष्ट्रीय एकता और एकात्मकता लाने में बहुत सहायक होंगे । उनके निर्मल जीवन से कर-चोरी करने वाले, भ्रष्टाचारी तत्व तथा अन्य आर्थिक तथा दूसरे अपराध करने वाले लोग हतोत्साहित हो जायेंगे । अपनी ईमानदारी तथा पक्षपातहीनता से व सामाजिक परिवर्तन के कार्य को भी आसान बना सकेंगे ।

माऊंट आबू में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी आल इण्डिया हाऊसिंग डीवलपमेंट एसोसियेशन के अग्रिम सदस्यों, हाऊसिंग कमिशनरों तथा टाउन प्लैनरज को सम्बोधित करती हुई।

वैज्ञानिक और प्रायोगिकविद विश्व को बेहतर बनाने में क्या सहयोग दे सकते हैं?

सम्भवतः सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि वैज्ञानिकों तथा तकनीकज्ञों का आध्यात्मिक अभिस्थापन (Spiritual Orientation) होना चाहिए। जैसा कि आईंस्टीन ने कहा है: 'अध्यात्म के बिना विज्ञान अन्धा है'। व्यक्ति तथा समाज की शान्ति के लिए आध्यात्मिकता आवेश्यक है। आध्यात्मिकता-विहीन वैज्ञानिक की नैतिक चेतना स्वस्थ एवं सुदृढ़ नहीं होती और वह उस शान्ति तथा आनन्द से भी वञ्चित होता है जिसकी प्राप्ति सहज बुद्धि योग (Meditation) से होती है। जैसे विज्ञान वैज्ञानिकों तथा तकनीकज्ञों को प्रकृति की शक्तियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने के योग्य बनाता है, वैसे ही सहज बुद्धि योग उन्हें अपने भीतर की शक्तियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में समर्थ बनाता है।

सभी यह चाहेंगे कि वैज्ञानिक तथा तकनीकज्ञ यह दृढ़ संकल्प कर लें कि वे विज्ञान या तकनीकी कौशल का उपयोग परमाणु अस्त्रों – जैसे जन-संहारक अस्त्रों- शस्त्रों के आविष्कार या निर्माण के लिए नहीं करेंगे।

असके बजाय यदि वे विज्ञान तथा प्रोगिकी अथवा तकनीकी का प्रयोग ग़रीबी की स्थिति को सुधारने के लिए तथा सामान्य लोगों के दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के निर्माण के लिये करें तो वह उच्च सेवा होगी। दूसरे शब्दों में, विज्ञान एवं तकनीकी से न केवल कुछ ग़रीब लोगों का लाभ हो बल्कि बहुसंख्यक ग्रामीण तथा ग़रीब जनता को भी लाभ हो; उनका जीवन सुखमय बने।

वैज्ञानिकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि विश्व में ऐसी भी सत्ताएँ अथवा वास्तविकताएँ हैं जिनका अनुभव हमारी ज्ञानेन्द्रियों की सामर्थ्य से बाहर हैं। उनका अनुभव इन्द्रियातीत प्रत्यक्षणों के द्वारा ही किया जा सकता है। उन्हें तभी समझा जा सकता है जब मन अशुद्धियों से मुक्त हो और ठीक अवस्था में स्थित हो। 'स्व' अथवा आत्मा को, जो कि एक चेतन सत्ता है, और परमपिता परमात्मा को, जो कि इस मानवी अथवा पार्थिव संसार और उसके अवकाश (Space) से परे हैं, मन के धार्मिक आयाम को विकसित करके तथा विचारों को शुद्ध करके ही जाना, समझा तथा अनुभव किया जा सकता है। व्यक्ति के इस पहलू को विकसित करना ज़रूरी है क्योंकि इसके बिना न तो मनुष्य का जीवन सामान्य होता है और न उसकी चेतना का स्तर इतना महान् होता है जितना कि होना चाहिए और हो सकता है।

इस विधि वैज्ञानिक न केवल प्रकृति की शक्तियों पर बल्कि स्वयं की प्रकृति (स्वभाव) पर भी नियन्त्रण कर सकेंगे। जहाँ विज्ञान ने उन्हें दिशा-निर्देशित मूसल (guided missiles) बनाने के योग्य बनाया है वहाँ आध्यात्मिक ज्ञान उनके जीवन का दिशा-निर्देश करेगा।

जयपुर: सर्व के सहयोग से सुखमय संसार मेला में चेतन्य देवियों की झांकी के समक्ष उपस्थित हैं ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी, एस० एन० भार्गव न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय तथा सुषमा बहिन।

"व्याधि"—वरदान या विघ्न

—ब्र०कु० सूर्य, माउण्ट आबू

तीस वर्षिया शीला अचानक अर्द्धांग (Paralysis) की शिकार हो गई। उससे पहले उसका जीवन सुखपूर्वक बीता था। उसे दो मास अस्पताल में रहना पड़ा जहां उसे अनेक अनुभव हुए। उसकी बड़ी बहन लीला जो कि ज्ञान-योग में काफी प्रवीण है, उससे मिलने के लिए आई। परन्तु व्यस्तता के कारण वह जल्दी नहीं आ पाई थी। दोनों ही ईश्वरीय कार्य में पूर्णरूपेण सहयोगी रहीं। दोनों के मिलन पर उभरे वृतांत यहाँ प्रस्तुत हैं।

शीला चारपाई पर मग्न मुद्रा में लेटी हुई है। चेहरे पर कुछ चिन्ता की लकीरें और निराशा के चिह्न भी दिखाई दे रहे हैं। शीला की आँखें बन्द हैं। पास ही एक सेवाधारी बहन बैठी है। धीमी गति से ईश्वरीय प्रेम में मग्न करने वाला मधुर गीत बज रहा है। तभी लीला कमरे में प्रवेश करती है ··· शीला की आँखें खुलती हैं ··· लीला उसे सहानुभूतिपूर्ण नजरों से एकटिक निहार रही है।

शीला—(आँखों में अश्रु) आओ दीदी ··· आज कैसे अपनी इस भाग्यहीन बहन की याद आ गई?

लीला—ये क्या कहा शीला तुमने ··· भाग्यविधाता भगवान् स्वयं जिसके साथ हों, वह भाग्यहीन नहीं, पद्मा-पद्म भाग्यशाली है। वापिस लो अपने ये शब्द ··· तुम तो सबका भाग्य निर्माण करने वाली हो ···

शीला—(अश्रुधारा बहने लगती है) नहीं दीदी, मैं अभागिन हूँ। युवाकाल में ही मैं मृत समान हो गई। अब मेरा क्या महत्व ··· अब पूरा जीवन मुझे अधीनता की घड़ियाँ गुजारनी पड़ेंगी। दीदी, मेरे सारे अरमानों पर पानी फिर गया ··· क्या-क्या सपने संजोये थे मैंने ! सब धूल में मिल गये।

लीला—(स्नेह से सिर पर हाथ फेरते हुए) नहीं शीला, नहीं, धैर्य व साहस न खोओ। जिन्दगी में ऐसे दिन किसी के सामने कभी भी आ सकते हैं। तुम्हारा जीवन तो विश्व के लिए रोशनी है, इस रोशनी को मन्द न होने दो बहन,—सारा संसार देखे तुम्हारी अविचल श्रेष्ठ स्थिति को ! भगवान् स्वयं छत्रछाया बनकर तुम्हारे ऊपर स्थित है। जरा अपने दिव्य चक्षुओं को तो खोलो, वो प्राणेश्वर तुम्हें अपनी गोद में उठाये हुए है ! उसने वायदा किया है—"मैं हर समय तुम्हारे साथ हूँ।"

शीला—(आँसू पोंछते हुए) हाँ दीदी ··· आपने मेरी सोई हुई चेतना पुनः जगा दी। परन्तु यह तो बताओ, अपनी इस बहन को आप भूल कैसे गई थी? ज्ञान ने इतना न्यारापन तो नहीं सिखाया। न्यारेपन व निर्मोहीपन के साथ मनुष्य का कुछ कर्त्तव्य भी तो होता है।

लीला—मुझे खेद है शीला ··· मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ ! मुझे आपके समाचार मिलते रहे। मुझे पहले आना चाहिए था ··· मुझे अपने कर्त्तव्य का बोध था, परन्तु कुछ अलौकिक बन्धन ··· मुझे देर हुई, इसका अर्थ यह नहीं कि मुझे आपसे प्यार नहीं।

शीला—अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए कोई भी बन्धन मनुष्य को बाँध नहीं सकता। ईश्वरीय मर्यादाएँ पहले कर्त्तव्य बोध कराती हैं।

लीला—आपने ठीक कहा शीला बहन। मुझे खुशी है कि इतनी भयंकर व्याधि में भी आपका विवेक पूर्णतया निखरा हुआ है। आप ज्ञान-युक्त हैं, साहस व हिम्मत की चेतन मूर्त्ति हो। परन्तु आपने ये क्यों कहा कि अब मैं जीवन भर पराधीन रहूँगी?

शीला—हाँ दीदी ··· अब तो यह शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया। क्या रह गया इसमें ! फिर से वही सामर्थ्य अब कहाँ लौटेगी ! मुझे हर कदम पर दूसरों की इन्तजार करनी पड़ेगी, अनेकों के ताने सुनने पड़ेंगे।

लीला—नहीं बहन, जिसने माया को गुलाम बनाया हो, वह किसी की भी गुलाम नहीं बन सकती। जो स्वयं पर राज्य करना जानते हों, वह पूरे कल्प में कभी भी गुलामी के शिकार नहीं होंगे। शरीर नहीं रहा तो स्वस्थ मन व शक्तिशाली बुद्धि तो है। आप भूल गई कि शरीर तो आप पहले ही परमपिता को दान कर चुकी हो? अब वह तुम्हारा रहा ही कहाँ !

शीला—(चेहरे पर दिव्यता झलक आई) ओह ··· मैं भूल गई थी इस सत्य को! सच, मेरा तो यह शरीर रहा ही नहीं, फिर इसकी चिन्ता मुझे क्यों सताये ! मैं तो इस देह से भिन्न, एक योगिन हूँ, मैं तो एक समर्थ आत्मा हूँ ··· मुझे निराशा क्यों?

लीला—हाँ शीला, यों ही मनुष्य उल्टा सोच-सोच कर मन को व्याकुल कर लेता है। परन्तु ध्यान रखना—हिम्मत जीवन का श्वास है, वह कभी न रुके। वास्तव में ये कमजोर संकल्प भी बीमारियों के उपचार में बड़ी भारी बाधा हैं। श्रेष्ठ व शक्तिशाली संकल्प स्वस्थ होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि आत्मा से ही शरीर के सभी अंगों को शक्ति प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में योगबल से हम असाध्य बीमारियों का भी उपचार कर सकते हैं।

शीला—मैं तो यह मान बैठी हूँ कि अब वही शीला तो लौटेगी नहीं, मैं अब पूरी तरह तो कभी भी ठीक नहीं हो सकूंगी?

लीला—ऐसा नहीं है शीला, आज से आप यह सोचो कि जिसको यह शरीर दिया है, वह सर्व समर्थ है। यह तो कोई भयंकर कर्म का भोग था, जो समय के साथ पूर्ण हो गया। अब फिर वही सुख के दिन आयेंगे, वही शीला होगी, वही सेवाएँ होंगी और वही योग के सुन्दर अनुभव ··· इसलिए निराशा को पूर्णतया भस्म कर दो।

शीला—परन्तु मैं यही सोचती हूँ कि इतने वर्ष मैंने दिल से सेवा की, शिवबाबा को दिल में समाया—फिर भी यह सब क्यों, उन्होंने मदद क्यों नहीं की? यदि भगवान् के बच्चों को भी इतना कष्ट हो ··· तो ···

लीला—(मुस्कराते हुए) देखो शीला, तुम्हारी ये भोली बातें सुनकर तो शिवबाबा भी मुस्करा रहे होंगे! सचमुच, तुम एक छोटे बच्चे के समान बन गई हो। अरे पगली, यदि वह सर्व समर्थ तुम्हारी सम्भाल न करता तो क्या तुम जिन्दा होती! यह तो मौत का बुलावा था, परन्तु उस परमपिता ने तुम्हें काल के मुँह से निकाल दिया। इसलिए गीत गाओ उस सच्चे प्रियतम के

शीला—(मधुर मुस्कान से) ये तो मैं यों ही कह रही थी दीदी। मुझे पता है, उसने ही मेरी सम्भाल की है, वही सच्चा सहारा बन कर साथ रहा है और रहेगा भी।

लीला—शीला, बोलो मैं आपकी क्या सेवा करूँ? बाकि तो सब ठीक है ना।

शीला—हाँ दीदी, सब ठीक है। परन्तु इस बीमारी ने जीवन में नवीन रोशनी अवश्य दी है। मैं यही सोचकर हर्ष का अनुभव करती हूँ। इस भयंकर बीमारी ने मुझे सावधान किया, जीवन का महत्व समझाया।

लीला—हाँ, ये ही अनुभव मैं आपसे सुनने की इच्छुक हूँ। आप मुझे अपनी दो मास की अनुभूतियाँ सुनाओ।

शीला—पहला एहसास तो मुझे यह हुआ कि मैं इससे पूर्व सेवाओं की ओर ज्यादा झुक गई थी जिससे स्वयं की साधना की गति धीमी हो रही थी। शायद शिवबाबा को यह स्वीकार नहीं था। वह मुझे महान् योगिन व महान् विचारक देखना चाहता था। इसलिए ···

लीला—(हँसते हुए) हाँ, तो इसलिए उस परम हितैषी परमपिता ने आपको अपनी गोद में विश्राम दे दिया ··· यही तो सच्चा प्यार है उसका ···

(कुछ क्षणों के लिए दोनों ही मग्न हो जाते हैं ···)

शीला—मुझे यहाँ खूब एकान्त मिला, स्वचिन्तन का नवीन पथ ज्ञात हुआ। मैं सोचा करती थी—यह शरीर भी क्या है ··· और इसकी सुन्दरता भी कितनी अस्थाई है ··· जिसके लिए मनुष्य न जाने क्या-क्या करता है, कितना समय लगाता है! इस चिन्तन ने मुझे बहुत उपराम किया।

मैं यह भी सोचती थी कि मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है और इसमें कितना अभिमान है मनुष्य को! यों ही मनुष्य अहंवश दूसरों को दुःख देता है, अपने को न जाने क्या-क्या समझता है। सच, दुःख देना—क्या कहूँ, महापाप है।

लीला—हाँ शीला, ऐसे भयंकर कर्म-भोगों में मनुष्य के पुण्य ही उसके सच्चे रक्षक बनते हैं। पुण्य ही प्राण बचाते हैं ··· ऐसे में न धन काम आता और न सम्बन्धी। इसलिए मनुष्य को निरन्तर पुण्य की पूँजी बढ़ानी चाहिए।

शीला—हाँ, मैंने भी यही महसूस किया कि कोई भी दर्द व्याधि के अनुरूप नहीं, पाप कर्मों के अनुरूप ही महसूस होता है। यह सत्य है कि यदि हमने बहुतों को सुख दिया होगा तो हमें भयंकर व्याधियों में भी कष्ट अनुभव नहीं होगा।

लीला—बहुत सुन्दर अनुभव किया आपने। लगता है ये व्याधि आपके लिए वरदान बन गई है!

शीला—हाँ, पहले तो लगता था कि जीवन में बड़ा भारी अकल्पनीय विघ्न आ खड़ा हुआ है, परन्तु अब तो सचमुच यह वरदान ही बन गयी, निःसन्देह यह व्याधि जीवन में दिव्यता लायेगी। शरीर तो अनेक मिलते रहेंगे परन्तु श्रेष्ठ स्थिति तो कल्प में एक ही बार बन सकती है।

लीला—ठीक अनुमान है आपका। वास्तव में हम प्रत्यक्षता की ओर बढ़ रहे हैं। प्रत्यक्षता में हमारे तन की दिव्यता भी श्रेष्ठ भूमिका निभायेगी, इसलिए वास्तव में ये बीमारियाँ नहीं हैं, बल्कि शरीर से जहरीले तत्वों को बाहर निकाल फेंकने के तरीके हैं। इसलिए हमें यह सोचकर प्रसन्न होना चाहिए कि हमारी देह दुर्बल नहीं हो रही, बल्कि दिव्यता की ओर बढ़ रही है।

शीला—बड़ा ही सुन्दर विचार है यह! सचमुच, इस तरह के चिन्तन से मन शीतल व धैर्य-युक्त रहेगा।

लीला—और शीला बहन, ··· जो कुछ भी इस जीवन में आये, मनुष्य को उसे सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। तब ही मनुष्य शान्तचित्त से श्रेष्ठ स्थिति का निर्माण कर सकता है व अपने कर्त्तव्यों का भी पालन कर सकता है। परन्तु प्रायः मनुष्य यह सोचकर परेशान हो उठता है कि यह क्यों व अब क्या होगा ···।

शीला—यह बात सुनकर मुझे आन्तरिक सुख मिलने लगा दीदी। काश कि आप पहले आई होती! क्योंकि बीमारी तो आखिर बीमारी ही है, अच्छे-अच्छे महावीरों को भी धराशायी कर देती है। मैं सच बताऊँ दीदी, मुझे ये विचार अवश्य ही परेशान करते थे कि "अब इस जीवन का क्या होगा? न पास में धन है और न तन की शक्ति। अनेकों की

टीकाएँ भी तो सुननी पड़ेंगी। कल कहीं मुझे घर ···"

लीला—शीला, ऐसे विचार तुम्हारे मन में आने सम्भव हैं, मनुष्य तो मनुष्य ही है। निर्बलता किसी न किसी कोने में प्रत्येक मनुष्य के अन्दर छुपी है। परन्तु ये व्याधि-काल ही तो मनुष्य की परीक्षाओं का समय होता है। इसमें अडोल रहना ही परीक्षाओं में खरा उतरना है। ऐसी परीक्षा के समय हमें लौकिक सम्बन्धी भी याद न आवें कि यदि मेरी माँ होती तो··· आदि-आदि। इससे मनुष्य का मनोबल गिरता है और हम मानो पेपर में फेल हो जाते हैं। क्या हम नहीं देखते कि घरों में सबकी उपस्थिति में भी एक मरीज का क्या हाल होता है! हमें यह भी मालूम हो कि लौकिक सम्बन्धियों की याद आते ही हमारे सिर पर से ईश्वरीय साया हट जाता है।

रही बात जीवन के भविष्य की। यदि मनुष्य योग्य है तो उसका भविष्य अवश्य ही उज्ज्वल है। बस, अपनी योग्यताओं को रूपान्तरित कर देना है। अब जीवन में चिड़चिड़ापन प्रवेश न करे। दूसरों को आगे बढ़ाओ तो पहले से भी अधिक माननीय, पूजनीय बन जाओगी। घबराओ नहीं, इस जीवन की नैया का खिवैया कौन है—जरा याद करो!

शीला—हाँ, बीमारी मनुष्य को चिड़चिड़ा अवश्य करती है। मैंने भी कई बार स्वयं को इसका शिकार पाया, परन्तु मैं जल्दी ही संभल गई।

लीला—मनुष्य की अनेक कामनाएँ ही उसे चिड़चिड़ा करती हैं। दूसरे हमारी सेवा करें, हमें पूछें, हमें प्यार करें, हमारी सम्भाल करें, हमें सहयोग दें—ये कामनाएँ ही परेशानी का कारण बनती हैं। परन्तु इसके स्थान पर एक योगी को यह सोचना चाहिए कि भगवान् स्वयं मेरी सम्भाल कर रहा है। वह स्वयं मेरा सहयोगी है, उस प्यार के सागर का प्यार का हस्त सदा ही मेरी पीठ पर है। बस, भगवान् से जहाँ सब कुछ मिल रहा हो, वहाँ मनुष्यों से कामना का क्या महत्व! परन्तु प्रायः मनुष्य भगवान् की शक्तियों को भूल मनुष्यों की ओर ही देखने लगता है।

शीला—ठीक कहा दीदी आपने, सचमुच ये कामनाएँ ही हमें ईश्वरीय सहयोग से वंचित करती हैं। परन्तु दीदी, बीमारी में कोई सेवा करने वाला तो चाहिए ही। यदि कोई पूछे ही नहीं तो मनुष्य करे भी क्या? परन्तु कई निर्दयी ऐसे होते हैं जो दूसरे को बीमार देखकर खुश होते हैं।

लीला—यदि हम दूसरों को सहयोग देंगे तो जरूर दूसरे भी हमारी सेवा करेंगे। यदि हम योग-युक्त होंगे तो सारा विश्व हमारा सहयोगी होगा। यह अटल सत्य है।

शीला—परन्तु क्या शिवबाबा आकर हमारी स्थूल सेवा भी करेगा? हमारे पैर दबायेगा!

लीला—(हँसते हुए) क्यों नहीं, उसे बच्चा बनाकर उसका आह्वान करो। निःसन्देह, बच्चा बनकर वह पैर दबायेगा। माँ रूप में उसे याद करो—वह परमपिता अलौकिक माँ बनकर सेवा करेगा। हमें आभास होगा, इन सब बातों का। परन्तु इसके लिए चाहिए सच्ची दिल व उससे सर्व सम्बन्ध ···

शीला—ये अनुभव तो रह ही गये हैं, अब इनका भी अभ्यास करूँगी। शायद ये नवीन अनुभव देने का ही उन्होंने मुझे ये स्वर्ण अवसर प्रदान किया है।

लीला—बाकि, अपने भविष्य की डोर परमपिता के हाथ में थमाकर निश्चिन्त हो जाओ। सभी का भविष्य उज्ज्वल करने वालों का भविष्य अन्धकारमय कैसे हो सकता है! दूसरी बात, यह भी न भूलना कि जो आज है वो कल नहीं रहेगा, परिस्थितियाँ बदलेंगी। सदा ही आकाश में काले मेघ नहीं मँडराते। सुख-दुःख, दुःख के बाद पुनः सुख—यही विधान है। इसलिए कल अवश्य ही सुनहरा दिवस होगा।

शीला—बड़ी तसल्ली दी आपने दीदी। आपको दिल से शुक्रिया। अब मुझे भावी विचारों का निर्माण सुन्दर ढंग से करना है। स्वयं को सफलता के शिखर पर पहुँचाने का नवीन पथ अपनाना है। हाँ, बाकि दूसरों की टीका व आलोचना से डर अवश्य लगता है। लोग कहेंगे—शीला तो कुछ करती नहीं—यह सुनकर मन भारी तो अवश्य ही होगा!

लीला—बात तो ठीक है आपकी। परन्तु अब स्वयं को आलोचना सुनने के लिए तैयार कर लो। आलोचना से डरने वाले कभी भी शक्तिशाली नहीं बन सकते। जो लोग दूसरों की आलोचना करते हैं, उन्हें यह भूल जाता है कि उन्हें भी कभी इन्हीं परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा।

बाकि, कभी भी बीमारी में सदा ही सोते न रहना। कुछ न कुछ यज्ञ-सेवा अवश्य ही करनी चाहिए। सेवा का बल भी स्वस्थ होने में मदद करेगा। यदि हम कुछ भी न करेंगे तो तन, मन—दोनों की ही बीमारी बढ़ जाएगी।

"मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ"—यह स्मृति का टीका रोज अमृतवेले लगा लिया करो। बस, फिर दूसरों की टीकाएँ हवा में मिलकर प्रभावहीन हो जायेंगी। जो टीकाओं से डरते हैं, उन्हें ही ज्यादा टीकाएँ सुननी पड़ती हैं। इसलिए हल्के हो जाओ। मनन शक्ति द्वारा अपने मनोबल को बढ़ाओ।

शीला—ठीक है दीदी। मैं श्रेष्ठ संकल्पों की पूँजी जमा करूँगी, अपनी सेवाओं द्वारा सबकी दुआयें प्राप्त करूँगी। यह सच है कि दुआएँ दवाइयों से ज्यादा प्रभावशाली हैं।

लीला—एक बात और ध्यान रखना—दूसरों की सहानुभूति पाने के लिए अपने कष्टों का वर्णन जहाँ-तहाँ नहीं करना। इससे दूसरों की सहानुभूति प्राप्त नहीं होती, वातावरण बिगड़ता है। दिल का हाल केवल एक प्राणप्रिये शिवबाबा को ही सुनाना है, वही दिल को हल्का करेगा।

कितनी भी कड़ी परीक्षा हो,पैसा पास न हो, शरीर पूर्णतया बेकार हो जाए, दिल का दौरा पड़ जाए—धैर्यता व सन्तुलन बना रहे। जो कुछ भी निश्चित भावी होगी, उसे तो रोका नहीं जा सकेगा, इसलिए यदि मृत्यु का भी बुलावा हो तो सब कुछ कल्याणकारी है—ऐसा जानकर योगयुक्त हो जाना चाहिए। अर्थात् जैसी भी परिस्थिति है, उसमें ही अपनी आत्मिक उन्नति का मार्ग खोज लेना चाहिए।

शीला—बहुत सुन्दर चिन्तनधारा है यह। व्याधियों के समय हमारी खुशी नष्ट न हो—हमें किस तरह सोचना चाहिए?

लीला—भविष्य के सुखमय सपनों को मानस पटल पर उभारकर वर्तमान के दुःखों को भुला दें।

यह सोचकर प्रसन्न रहें कि 2500 वर्ष तक हमें कोई भी रोग नहीं होगा। उसके हजारों वर्ष बाद तक भी हम किसी भयंकर व्याधि से ग्रस्त नहीं होंगें।

शीला—आनन्दित कर दिया दीदी आपने तो। मैं तो सोचती थी कि मैंने क्या पाप किये थे जो ये बुरे दिन देखने पड़े! परन्तु अब महसूस होने लगा कि ये जीवन में श्राप नहीं था, ये तो वरदानों का आह्वान था।

लीला—ऐसे ही समय हम अशरीरीपन के सुन्दर अनुभव कर सकते हैं। भगवान् हमारे साथ है—यह आभास कर सकते हैं। वह हमारे लिए हमारे प्यार-वश क्या-क्या करता है—यह देखने की सुन्दर वेला होती है ये!

शीला—अवश्य दीदी ··· अब भविष्य के लिए आप कुछ वरदानी बोल कहिये ···।

लीला—(शीला के सिर पर प्यार से हाथ रखकर)। संसार हो न हो, भगवान् तो तुम्हारा है। जिसका भगवान् हो, उसे और किसी की आवश्यकता नहीं। अब जीवन खुशियों में उड़ान भरे, तन का प्रभाव मन पर न आये।

- चेहरे से निराशा के चिह्न सदा के लिए लोप कर दो। जो हुआ वही सत्य था, वही अटल था।
- अब धैर्यता, सन्तोष व हिम्मत से आगे बढ़ो।
- अपनी योगयुक्त स्थिति का आनन्द लो तो जीवन प्यार से भी ओत-प्रोत हो जायेगा व अनुभवों की खान भी बन जायेगा।
- अब बीते जीवन को भूल जाओ। अब इस जीवन को ही स्वीकार करके इतने महान् बन जाओ कि समस्त विश्व तुम्हारे जीवन से प्रकाशित हो उठे।

शीला—धन्यवाद दीदी ··· आज से मैं पूर्ण स्वस्थ हो गई। अब बहुत देर हो गई है, आप भी यहीं विश्राम करो।

लीला—खुश रहो लीला ··· ■

"दिवाली मनाने से पहले"

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

मारो पहले रावण को फिर आत्मदीप जला लेना,
हरो पहले दश को फिर दिवाली मना लेना,
वरना—बुझाते रहेंगे दीपक तिहारा प्रति पल,
तुम जलाते रहोगे कहाँ तक, कब तलक!

मुँधाओ पहले संजीवनी बेहोश लक्ष्मन को फिर मिलन मना लेना,
काटो उगते सर शर से दसियों, फिर विजयादशमी मना लेना,
वरना—शोक विह्वल सब को करते रहेंगे पल पल,
धीरज भी धरोगे तो कहाँ तक कब तलक!

हटा लो पहले जाले संशय के फिर दिव्यता छिटका देना,
सफेद साफ करो पहले अन्तर्मन को, फिर मूरत उसमें बिठा देना,
वरना—भरत मिलाप होने न देंगे कीट पतँग,
काटते रहेंगे प्रश्नों से तिहारा अन्तःकरण!

मुक्त करो पहले शोक से स्व की सीता को,
फिर दिलाराम का संग करा देना,
वरना—हँसेगा रावण खुद को समझ के अमर,
रोएगा जमाना उसके क्रूर नर्तन पर!

आने दो राम को मन में पहले, फिर घर प्राँगण सजा लेना,
मरने दो पहले असुर सारे, फिर खुशियाँ मना लेना,
वरना-जाग उठेगा कोई कुम्भकरण गरजेगा, कोई मेघनाद तुम्हारा!

कोई विभीषण भी दे सकेगा कहाँ तक तुम्हारा साथ
इसलिए-करो स्वाहा पहले सर्वस्व, फिर जीत का नगाड़ा बजा लेना,
मारो पहले रावण को फिर आत्मदीप जला लेना,
भर लो जौहर तप का बनवाँ में, फिर, राज्य भाग पा लेना
हरो पहले दश को फिर दशहरा मना लेना।। ■

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस,कृष्णानगर,दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)---70